मैंने कहा "हां ठीक है, तो तुझे अब पूछने की ज़रूरत न पड़ेगी। देख तू भठियारे के पास जा और मेरी मोहर भी साथ लेता जा, खबरदार इसे हाथ से जाने मत दीजियो, मेरा सलाम कह कर उसे यह पैग़ाम दीजियो कि आप की इनायत से हमें अब इस बनिज का इतना पक्का एतकाद होगया है कि मीरसाहब आप के हक का रुपया पेश्तर ही अदा कर दिया चाहते हैं आप चल कर ले आइये; और यह भी कहियो कि मीरसाहब इस लिये ऐसा करते हैं कि उनका वापस आना शायद इस राह से न हो, या होगा भी तो बहुत दिनों के बाद पस हमें आप के कहने पर इस कदर एतकाद है कि हम इस काम को इसी वक़्त कर दिया चाहते हैं। क्यों, यह सब बातें तुझे याद रहेंगी न? याद रख कि तू उससे "रमासी" ज़ुबान में बातें करियो क्योंकि वह उसे खूब समझता है"।

जंगली ने कहा "बहुत अच्छा, मुझे सब याद है" यह कह कर वह मेरे पैग़ाम को लफ़्ज़ बलफ़्ज़ कह गया।

मैंने कहा "ठीक है, यह ले अँगूठी। ले अब दौड़ता हुआ चला जा, देखूं तो क्या जल्द वापस आकर दो रुपये ईनाम पाता है"।

उसने निहायत खुशी से कहा "जमादार साहब, मैं चला और अभी दम भर में आ पहुंचता हूं"।

पीरखां ने कहा "मीरसाहब, यह निहायत ज़हीन लड़का है, देखिये क्या फ़ौरन् दूसरे का मतलब समझ लेता है। मगर श्रोह! मीरसाहब, पीरू इस पैग़ाम पर हर्गिज़ आनेवाला नहीं, वह पुराना चण्डूल है भूसियों से गिरफ़ार होने वाला नहीं"।

मैंने कहा "एतकाद रखिये वह ज़रूर आवेगा, वह रुपये की झन्झनाहट सुनतेही यों दौड़ेगा जैसे कोई आशिक अपनी माशूक़ः का पैग़ाम पाकर दौड़ता हो। सिवाय इसके इसमें भूसियों ही की उम्मेद नहीं है, रुपये हैं स्यां रुपये; इतने के लिये तो वह दिल्ली दौड़ता चला जायगा"।

पीरखां ने कहा "अच्छा देखा जायगा, अगर उसकी क़िस्मत में आना लिखा है तो अल्ला उसे ले आवेगा और वह ख़ामख़ाह आवेगा क्योंकि क़िस्मत

का लिखा टल नहीं सकता । क्या। पीरू भठियारा रात के वक़ अपने मकान से निकल ठगों से मुलाकात करने आवेगा? मैं फिर भी कहता हूं मीरसाहब यह बात गैरमुम्किन है, अक्सर इसके लिये कोशिश की गई है मगर कभी कामयाबी हासिल न हुई, उसने उन लोगों पर हँस दिया और उसका हँसना बेशक वाजिब है"।

मैंने कहा "खांसाहब तुमारा शक करना ठीक है मगर इनशाअल्ला आज ही रात को हम उसकी दाढ़ी पर खाक डालेंगे, पस बेहतर है कि हम लोग तयार रहें, मोती और दो लूवों को बुला कर क़ब्र खोदने के कह दिया जाय मगर यह भी बहुत जल्द तयार होना चाहिये।

मोतीराम आया और उसे भी पीरखां के म्वाफिक कामयाबी का खतराथा। उसने कहा "मीरसाहब, वह हर्गिज़ आप के दाम में आने वाला नहीं योंही पारसाल गनेशा ने बेशुमार दौलत का हिस्सा यहां लगाया और पीरू से कहला भेजा कि अगर तुम आओ तो अपना हिस्सा ले जाओ, वह हँसा और बोला कि मैं खूब समझता हूं, मेरा हिस्सा फ़लाने दरख़ के खोंड़र में रखदेना, वरना कल सुबह को मैं सागर की तमाम पुलिस तुम्हारे पीछे भेज दूंगा।

मैंने पूछा "तो क्या तुम लोगों ने उसका हिस्सा वहां रख दिया?"

उसने कहा "हां, वरना और क्या करते?"

मैंने जबाब दिया "तो गनेशा उल्लू था, अगर मुझसे कभी मुलाकात होगी तो मैं उस्के मुंह पर कह दूंगा। मैं तो पीरू को एक कौड़ी भी न देता और न अब दूंगा जब तक कि वह खुद न आवे।"

कुछ देर तक हम लोग खामोश रहे, ठंढी २ हवा के साथ क़ब्र खोदने की धीमी २ आवाज़ एक तरफ़ से आरही थी। मैंने ख्याल किया कि वह ज़रूर आवेगा, और आज उसके बदज़ातियों का खातिमा होगा; शर्म है उस बुज़दिल पर जो इसतौर इनसान का खून फ़रोख़ करता है और खुद उन पर हाथ छोड़ने की हिम्मत नहीं रखता। मैं इसी ख्याल में गर्क था कि एक तरफ़ अंधेरे में जंगली अकेला दौड़ता हुआ आता दिखलाई दिया। मेरे दोनों दोस्तों

ने उसे तनहा देखते ही कहा "क्यों मीरसाहब हम लोग क्या कहते थे देखिये आखिर वही बात आई न ?"

मैं निहायत पशेमान हुआ और अपनी रंजिस पोशीदा करने के लिये दांतों से होठ काटने लगा। फिर मैंने कहा "खैर देखिये तो वह आकर क्या कहता है ?"

उसके आतेही मैंने कहा "क्यों जंगली ! क्या खबर लाया ?"

उसका दम दौड़ने से फूल रहा था, उसने कहा जमादारसाहब ज़रा ठहर जाइये मैं दम लेकर सब हाल अर्ज़ करता हूं मैं बहुत तेज दौड़ता आया हूं।

मैने कहा "अच्छा थोड़ा पानी पी ले उस्से तेरी तबीयत दुरुस्त हो जायगी। कह हुआ क्या ? क्या कोई खतरा तो नहीं है ?"।

उसने कहा "जी नहीं खतरा किसी बात का नहीं ! सुनिये। मैं यहां से जाते वक़्त निहायत तेज़ गया मगर दौड़ा नहीं, मैंने ख्याल किया कि अगर वह मेरा दम फूलता देखेगा तो बेशक समझ जायगा कि कुछ दाल में काला है, सो जब मैं शहर के दर्वाज़े पर पहुंचा तो आहिस्ते २ चलने लगा और उसकी दूकान पर जा पहुंचा। वह चन्द मुसाफ़िरों के लिये कबाब पकाने में लग रहा था, मुझ से बोला कि उस कोठड़ी में चल कर ठहरो मैं आता हूं। मैं वहां जा बैठा और कुछ अर्सें के बाद वह मेरे पास आकर बोला—"कहो क्या खबर है ? तुम क्यों आये ? बनिज पक्का है। अभी तुम्हारा एक भेदिया आकर मुझ से कह गया है कि उसने साहूकार को यह हुक्म देते सुना है कि कल रवाना होना चाहिये। अब तुम क्या चाहते हो ?"

"पस मैंने आप का पैग़ाम लफ़्ज़ बलफ़्ज़ कह सुनाया और वह बड़े पशोपेश में पड़ा। कुछ देर तक तो वह कमरे में टहलता रहा और आपही आप कुछ बातें करता था, मैंने दो एक मर्तबः "दग़ाबाज़ी" और "गनेशा" का नाम उसके ज़बान से निकलते सुना। आखिरकार मैं बैठे २ उखता गया और उस्से कहने लगा कि "अब मैं ज्यादा नहीं ठहर सकता मुझे जल्द लौटने का हुक्म है; आप चलियेगा या नहीं।" वह ठहर गया और मेरी तरफ बग़ौर देख कहने लगा—

"कह तो लड़के, क्या यह पैग़ाम मोतीराम के रूबरू भेजा गया है ?"

मैंने कहा "नहीं, वह तो उस वक़ न था।"

"तो क्या वह इसका हाल जानता है ?"

मैने कहा "नहीं, उस वक़ तक तो वह शहर से आया भी न था, जो हो न तो मेरी और न जमादारसाहब की मुलाक़ात उससे हुई।"

"तो क्या पीरखां उस वक़ था ?"

मैंने हिम्मत से कहा "नहीं"।

उसने कहा "मगर यहां से तो वह तुमारे आका के साथही गया था"।

मैंने कहा "शायद ऐसा हो मगर मैंने उसे नहीं देखा। जब वह आया मैं जमादारसाहब का पलंग लगा रहा था और यह पैग़ाम मुझे अकेले में दिया गया है क्योंकि जब उन्होंने पलंग पर आराम फ़र्माया तो मुझे बुलाकर यह हुकुम दिया, और मैं आप को यह भी कह सकता हूं कि उन्होंने तकिये के नीचे से थैली निकाल कर आप के देने के लिये रुपये गिन रक्खे हैं।"

उसने पूछा "भला मेरे लिये कितने रुपये निकाले गये होंगे ?"

मैंने कहा "अठाई सौ तो मेरे साम्हने गिन चुके थे, अभी और गिन रहे थे कि एकबयक ठहर गये, थैली बांध कर रख दी और कहा कि बस इतना काफ़ी है।

उसने पूछा "और थैली में कितना होगा ?"

मैंने कहा "अल्लाह जाने मुझे इसका हाल क्या मालूम ?"

उसने कुछ देर तक टहल कर पूछा "अच्छा जमादार साहब के साथ उनके खेमें में कौन कौन सोता है ?"

मैंने कहा "कोई नहीं, मैं दर्वाज़े पर सोता हूं और अन्दर कोई जाने नहीं पाता"।

उसने कहा "तुम अच्छे लड़के और खूब चालाक हो, क्यों तुम भठियारे का काम पसन्द करते हो ?"

मैंने कहा "हां" क्योंकि मैं उसका मतलब समझ गया।

पीरखां ने कहा "देखा मीरसाहब, आपने कभी ऐसा बदज़ात देखा है? अफ़सोस, अगर मैं एक मर्तबः उसे पा जाऊं तो उसकी गर्दन मरोड़ कर अपने दिल को आसूदा करूं"।

मैंने कहा "हां इसे कहने दो, रोको मत"।

जंगलो ने कहा "खैर वह कई मर्तबः इधर उधर टहल कर आखिरकार मेरा हाथ पकड़ मेरे पास बैठ गया। मैं फ़ौरन् खबरदार हो गया और मैंने अपना दहिना हाथ कटार के मुट्ठे पर जो मेरे कमर में था धरा।

उसने कहा "जंगली तू निहायत अच्छा लड़का है, अगर तू चाहे तो इस काम में बेटे की मानिन्द मेरी मदद पहुंचा सकता है। तू अभी नौजवान है और इस खूनी रोज़गार में तेरा दिल हर्गिज़ न लगता होगा। सिवाय इसके तेरा जमादार तुझ से उतनी मुहब्बत न रखता होगा जितनी मैं रक्खूंगा, वह तुझ से सख़्त मेहनत लेता होगा"।

मैंने सिर हिला दिया।

उसने कहा "ठीक है, फिर तू आज़ाद हो जायगा, कह तेरा क्या इरादा है? खौफ़ मत खा मैं तुझे अपना फ़र्ज़न्द करार दूंगा। अल्लाह पर्वर्दिगार है, मुझे बीबी या औलाद कोई नहीं है"।

मैंने फिर सिर हिला दिया।

उसने कहा "ठीक है, गोकि तुझ से ऐसी बदसलूकी हुई है मगर मैं देखता हूं कि तू निमकहरामी नहीं किया चाहता; खैर मेरी बात सुन। मैं चलूंगा मगर अभी नहीं। तूने कहा कि तू खेमें के दर्वाज़े ही पर सोता है। बहुत अच्छा! तू ऐसा बेहोश सोया रहियो गोया तूने अफीम खाई है—क्यों सुनता है न? मैं आहिस्ते से तेरे ऊपर डांक जाऊंगा, और मुझे एक पुराना ढंग तिनके से खुर्खुराने का याद है—समझता है न?"।

मैंने कहा "हां आप असल थैलीही चाहते हैं"।

उसने कहा "ठीक है फ़र्ज़न्द तूने खूब समझा, तू एतकाद रख कि मैं उसे ज़रूर ले आऊंगा। चलते वक़्त मैं तुझे छू दूंगा उस वक़्त मेरे साथ आने की ज़रूरत नहीं है तू अपना मौका देखता रहियो"।

मैंने पूछा "मगर आपने भेड़ियों के बारे में क्या सोचा है?"

उसने कहा "ओह! मैं अपने तईं उन से बचा लूंगा, रात अँधेरी और बादल से घिरी है मुझे कोई देख न सकेगा। मैं अपने तमाम कपड़े उतार ऊपर से एक काला कम्मल ओढ़ लूंगा"।

मैंने कहा "मैं भी राजी हूं, मैं उन खराब लोगों को छोड़ कर अशराफ़ हुआ चाहता हूं। तो अब मैं जमादार साहब से जाकर क्या कहूं?"

उसने कहा "तू जाकर यह कहियो कि एक भेड़िया किसी चरवाहे के गल्ले में से हमेशा मोटी २ भेड़ें उठा ले जाया करता था, एक दिन उस चरवाहे ने चाहा कि अगर मैं भेड़िये को गिरफ़्तार कर मार डालूं तो बहुत अच्छा हो, पस उसने एक गड़हा खोद कर एक मोटी सी भेंड़ को टोकरे से बांध लटका दिया और आप भेड़िये के घात में हो बैठा। भेड़िये ने आते ही दूर से देखा कि आज तो चरवाहे ने नई सखावत की है। पस वह अपने तईं कहने लगा कि भेड़िये गोकि तू भूखा है लेकिन क्या ज़रूरत है कि तू एक भेड़ के लालच में आ जावे? वह वक़्त आपही आवेगा कि जब चरवाहा सो जायगा, पस तब तक तू सब्र कर गोकि अभी तेरा पेट खाली है मगर जल्द भर जावेगा। जमादार से यह अहवाल कह दीजियो वे आपही समझ जांयगे"।

मैंने कहा "जंगली, अल्ला जानता है कि तूने खूब काम किया, तेरी इस ईमानदारी का ईनाम तुझे बेशक दिया जायगा। क्यों दोस्तो अब उस बद-माश के बारे में तुम लोग क्या ख्याल करते हो?"।

दोनों ने कहा "इसमें कुछ ताअज्जुब की बात नहीं कि उस शख्स ने ऐसा कहा हो, लेकिन इनशाअल्ला! अगर वह आगया तो हमारे फन्दे से हर्गिज़ नहीं निकल सकता"।

मैंने कहा "अच्छा दो जासूसों को बुलाओ तो"।

वे दोनों फ़ौरन् हाज़िर हुये और मैंने उन्हें पीरू की बन्दिश सुनाकर कहा "दोस्तो तुम उस बदमाश को खेमे के अन्दर आने से हर्गिज़ मत रोकना; तुम में से एक शख्स तो मेरे खेमे के पास सोने का बहाना कर पड़ा रहे मगर आंखे खोले रहना, ज्योंही वह अन्दर दाखिल हो, तुम आहिस्ते से जाकर

पीरखां और मोतीराम को जगाकर दर्वाजे पर ले आना; तुम दोनों दर्वाजे के दोनों तरफ़ खड़े होजाना ताकि वह देख न सके। मैं सोने का बहाना कर पड़ा रहूंगा और उसे थेली उठा लेने दूंगा चाहे वह मेरे ऊपर गिर भी पड़े। ज्योंही वह बाहर निकले तुम उसे मजबूती से गिरफ़ार करलेना और जब तक मैं न आऊं उसे हर्गिज मारना पीटना मत; और जंगली, अगर तू सेर भर अफीम खाये हुये शख्स के मानिन्द न सोया रहेगा तो अल्ला जानता है कि तुझे भी उसके साथ उसी कब्र में छोड़ दूंगा"।

उसने कहा "मेरा खौफ़ हर्गिज़ न कीजिये, मैंने आपका निमक खाया है; आप मेरे मां बाप हैं, आप मुझपर हमेशा मेहरबानी रखते हैं मैं आपको क्यों कर धोखा देसकता हूं"। अगर मेरा ऐसा इरादा होता तो मैंने इस अहवाल का आप से जिक्र भी न किया होता"।

मैंने कहा "तो हमलोग तयार हों उसने कुछ कहा था कि मैं कब आऊंगा"?।

जंगली ने कहा "जी हां उसने कहा था कि मैं अपना काम खतम करने के बाद करीब आधीरात के वक्त आऊंगा"।

मैंने कहा "बहुत अच्छा, देखो तुम सब तयार रहो" हम लोग आजही उसकी दाढ़ी पर थूकेंगे"।

साहब, वह वक्त निहायत बेकरारी के साथ बीतता था और बहुत इन्तजारी के बाद आखिरकार उसके आने का वक्त करीब आन पहुचा। मै बारबार अपने छोटे खेमें के बाहर निकल यह देखता कि मेरे तमाम लोग अपने २ मौके पर लगे हैं या नहीं और जब उन्हें उनके काम पर हुशीयार पाता तो निहायत आसूदगी के साथ लौटजाता था, पीरखां मेरे खेमें के पास इस तरह सोया था गोया नींद में बेहोश हो मगर मै जानता था कि वह जागता है; भेदिये सब चुप चाप इधर उधर घूम रहे थे, मा सिवाय इसके रात निहायत अँधेरी थी हाथ से हाथ न सूझता था, और झील के लहरों के आवाज़ के सबब उसके पांव की आहट न लगने का खतरा था। आखिरी मर्तबः जब मैं बाहर से लौट कर अन्दर गया मैंने अपने दिल में कहा "देखा चाहिये, मैं

ख्याल करता हूं कि वह जरूर आवेगा, चूंकि वह चोर है ऐसा मौका हर्गिज हाथ से जाने न देगा, मगर अंधेरे से जैसा हम लोगों को मौका है वैसा उसे भी है।"

मैंने कहा 'जंगली, देख यह आखिरी मर्तबः था कि मैं बाहर निकला हूं, पहरे से खूब होशियार रहियो और मैं तुझे हर्गिज़ न भूलूंगा। पीरखां खेमे के पीछेही लेटा है दूसरों की चन्दा कुछ ऐसी ज़रूरत नहीं है उसके गिरफ़ार होतेही वे सब जमा हो जांयगे"।

उसने कहा "कुछ पर्वाह नहीं, मुझे अभी नींद मुतलक नहीं आई है, मैं इस आहिस्तगी से उठकर पीर खां को जगा दूंगा कि पत्ता भी न खड़केगा"।

खैर मैं अन्दर जाकर पलङ्ग पर लेट रहा; मैंने अपनी मोतबिर तलवार खींच कर दहिने बगल यों रखली कि, काम पड़तेही हाथ में आ जावे, पस उसे लिहाफ़ से ढक दर्वाजे की तरफ़ निगाह लगा उसकी इन्तज़ारी में हो बैठा अँधेरे में मेरी निगाह ऐसा जम गई थी कि अगर कोई भी शख्स दर्वाज़े के अन्दर आवे या इसके पास से गुजरे तो मैं उसे बाआसानी देख सकता था घण्टोहीं तक मैं इसी तरह पड़ा रहा, बल्कि मिनकता भी न था कि कहीं पीरू बाहर खड़ा आहट न लेता हो कि मैं जागता हूं या सोता। मैंने ख्याल किया कि आधी रात भी गुज़र गई और अब तक कोई न आया। मैं नाउम्मेद होने लगा, था पर मुझे एतक़ाद था कि उसकी मौत उसे ज़रूर ले आवेगी। साहब क्यों ऐसा होजाता है मैं कुछ कह नहीं सकता मगर अकसर मुझे कई मौके ऐसे पड़ चुके हैं।

आखिरकार वह आया। मैंने देखा कि दर्वाज़े पर किसी चीज़ के आने से अंधेरा होगया, फिर वह कुछ ठहरा तब जंगली को डांक झट अंदर आ गया। जंगली दर्वाजे पर लेटा हुआ ऐसे घुर्राटे मार रहा था कि मुझे भी उसके सोये रहने का शक हुआ मगर मैं तो जानता ही था कि मैं उसे बहाना करने का सख़्त हुक्म दे चुका हूं। अल्ला! अल्ला साहब, मैं क्योंकर बयान करूं कि मेरा कलेजा कैसा धड़कता था। एकबयक मेरेदिल में यह ख्याल उठा कि कहीं वह हथियार भी साथ न लाया हो और मेरा काम तमाम कर जावे। शायद

ऐसा हो; अनकरीब था कि मैं उठकर तलवार उसके कलेजे के पार करदूं मगर मैंने यह ख्याल छोड़ दिया और समझा कि यह कमबख़्त नाचीज़ चोर है इसे इतनी हिम्मत कहां कि तलवार लावे या उसका इस्तियामाल करे। पस मैं चुपचाप तलवार के मुट्ठे पर हाथ रक्खे सोया था। खेमा बहुत नीचा था इस-लिये उसे झुके २ आगे बढ़ना पड़ा। मेरे पास आ झुक कर देखने लगा कि मैं सोता हूं या जागता बल्कि उसका मुंह मेरे चेहरे से इसकदर नज़दीक था कि उसका गर्म सांस मुझे मालूम पड़ता था। उसे मेरे बेहोश सोने का एतकाद हो गया पस उसने फौरन् पीछे से अपना हाथ इस आहिस्तगी से तकिये के नीचे दिया कि अगर मैं दरहकीकत नींदमे गाफिल होता तो मुझे हर्गिज़ मालूम न होता। मगर थैली वहां न थी वह मेरे कान के नीचे दबी थी। टटोलते २ उ-सका हाथ थैली पर पड़ा और उसे मालूम हुआ कि खीचने से मैं जाग पड़ूंगा वह जमीन पर से एक टुकड़ा घास का उठा मेरे ऊपरवाले कान में आ-हिस्ते से खुर्खुराने लगा। मैंनें उसका मतलब समझ कर खांसी के साथ करवट ली, वह चिहुंक कर पीछे हट गया और कुछ देर तक खड़ा रहा, मगरफिर आहिस्ते २ टटोलने लगा। मुझे मालूम हुआ कि थैली खसकती है, खसकने२ एकदम तकिये के नीचे से निकल गई। ज्योंही उसने थैली अपने कांधे पर रक्खी त्योंहीं रुपयों के झनझनाहट की आवाज़ आई। मैंने देखा कि जंगली भी दर्वाजे पर नहीं है और भठियारे ने भी ताड़ा कि वह नज़र नहीं आता मैं अपने ही ख्याल में इस कदर गर्क था कि मैंने उसे जाते न देखा। वह खड़ा होकर आहिस्ते २ भुनभुनाने लगा कि "बड़े ताज्जुब की बात है कि वह चला गया मगर उसे रास्ता मालूम है मुझे हर्गिज नाउम्मेद न करेगा" बस ज्योंही उसने दर्वाज़े की बाहर कदम धरा कि एकबयक पीरखां, मोतीराम और दस बारह दूसरे शख्सों ने उसे गिरफ़ार कर लिया।

मैं फ़ौरन् उठकर दर्वाजे पर पहुंचा और उन सभों से कहने लगा "जल्द चिराग बालो, ज़रा इस चोरों के रुस्तम की शकल तो देखूं; इस बदमाश की इतनी हिम्मत कि यह ठगों के खेमें में भी चोरी करे"।

लोग चिराग ले आये, देखता क्या हूं कि वह बदज़ात कन्धे पर रुपयों की थैली यों रक्खे है गोया उसी की हो और खड़ा कांप रहा है।

मैंने कहा "वाह! तुम हो पीर? खैर, आखिरकार वह भेड़िया जो इस-कदर होशियार था चरवाहे के हाथ में आ फँसा-छोटा शिकार न लेकर बड़े ही पर दांत लगाये था और दाम में आगिरा—क्योंरे बदज़ात तू तो हम लोगों को लूटही चुका था पस अभी तेरी मौत होनी चाहिये, ताहम मैं तुझसे चंद सवालात पूछता हूं उन्हीं के जवाब से तेरे ज़िन्दगी या मौत का फ़ैसला होगा"।

उसने गिड़गिड़ा कर कहा "हां पूछिये, जी पूछिये, मेरी जान बख्स दीजिये—मैं अभी चला जाता हूं या कहिये आप के हमराह चलूं, आप चाहे मुझे जंगल में निकाल दीजियेगा और अगर फिर कभी मैं सागर या इस रास्ते पर अपनी शकल दिखलाऊं तो जो चाहे कीजियेगा"

मैंने कहा "बहुत अच्छा, तो इन बातों का जवाब दे। जिस बनिज का इकरार तूने किया है क्या वह झूठ है?

उसने कहा "मीर साहब, उस पर आप मुतलक शक व शुबहा न कीजिये, उसकी सचाई तो आप अल्लाह मीयां के कयाम के म्वाफ़िक समझिये। क्या आपके लोगों ने तयारी होते या साहूकार को हुक्म देते नहीं सुना? अब आप इस पर क्यों शुबहा करते हैं?"।

मैंने कहा "अच्छा अगर मैं तुझे छोड़ दूं तो तू क्या देगा? मैं दो हज़ार लूंगा"।

उस कम्बख्त ने कहा "ऐ मेरे साहब! मेरे साहब! दो हज़ार रुपये! इतना रुपया मैं कहां पाऊं? मेरेपास तो इस जहान में एककौड़ी भी नहीं"।

मोतीराम और कई लोगों ने कहा "तू झूठा है तूने हज़ारों रुपये बिचारे ठगों से वसूल किये है, सैकड़ों मौके तो मुझे याद हैं कि जब तूने हम्हीं लोगों से रुपये लिये हैं, क्या तू इन्कार कर सकता है?"

मैंने कहा "यह देख, रूमाल मौजूद है, इस का इस्तियामाल तो तू जानता ही है, कह रुपया देता है या नहीं?"

उसने कहा "जी हां, मैं दूंगा, मैं कुल्हाड़े की कसम खाकर कहता हूं कि आप मेरे साथ चल कर ले आवें"।

मैंने कहा "वाह! वहां तू हमें गिरफ़्तार करा दे। नहीं नहीं दोस्त पीरू! यों हम लोगों की दाढ़ी पर खाक मत डाल। इनशाअल्ला जो लोग तुझे गिरफ़्तार कर सकते हैं उनकी अक्ल तुझ से ज्यादा है। मैं तो तुझ से फ़कत दिल्लगी करता था—बतला तूने अपना तमाम माल कहां छिपाया है?"

उसने कहा "आप चाहे मेरी जान ले लीजिये मगर इसका मैं कुछ जवाब नहीं दे सकता"।

मैंने कहा "आह! तुझे तब मालूम होगा जब तेरा गला घोंटा जायगा। अच्छा दो शख्स इसे पकड़ो तो ओर इसके कंधे पर से थेली उतारो।"

उन्होंने थैली उतार उसके दोनों हाथ पकड़े और मैंने फ़ौरन् रूमाल उस के गले में देकर यहां तक कसा कि उसका दम घुटने लगा। उसने बोलने की बहुत कोशिश की, और आखिरकार मैंने अपना हाथ ज़रा ढीला कर दिया मगर वह मारे खौफ़ के एक लफ्ज़ भी न बोल न सका।

मैंने कहा "इसे ज़रा पानी दो ताकि इसका खौफ़ धो जावे"।

उसने पानी पीया और मेरे कदमों पर गिर कर जांबख्शी के लिये गिड़गिड़ाने लगा—मैंने उसे जूते से ठकेल दिया और कहा "बतला तेरा खज़ाना कहां है? एक मर्तबः रूमाल तेरे गले में पड़ चुका है, खबर्दार रह अबकी हर्गिज़ तुझे जीता न छोड़ूंगा बतला तेरा खज़ाना कहां है?"

उसका तमाम बदन कांपने लगा और उसने कहा "आप मेरी जांबखशी का इकरार कीजिये और मैं आप को तमाम माल बतला देता हूं"।

मैंने कहा "हां मैं इकरार करता हूं, तुझे यहीं रहना होगा और मैं अपने आदमियों से मँगवा भेजता हूं। तू जानता है कि अब देर करने का मौका नहीं है अगर तू हमें धोखा देगा तो नतीजा समझ रख—एक मर्तबः तुझे मालूम हो ही चुका है"।

उसने कहा "मोतीराम कहां है, वह उस मुकाम को जानता है"।

मोतीराम ने फ़ौरन् आगे बढ़ कर जवाब दिया है "झूठा कहीं का—मैं क्या जानूं? क्या तू मुझे अपने कमीने आमद का हिस्सेदार बनाया चाहता है?"

भठियारे ने कहा "तुम्हें वह मुकाम मालूम है मगर तुम यह नहीं जानते

कि यहीं मेरा माल है। तुम्हें वह आम के दरख़ का खोंड़रा याद है न जहां आखिरी मर्तबः तुम मेरा वह हिस्सा रख गये थे जो मैंने गनेशा से पाया था?"

पीरू ने कहा "बस तो उसी खोंड़रे में एक हाथ गहिरा नीचे खोदना मेरे पास जो कुछ सोना चांदी या ज़ेवर है सब वहीं गड़ा है"।

मैंने कहा "कम्बख़्त! देख मैं अपने ज़ुबान का सच्चा हूं। तुझे यहीं रहना होगा, तेरी कब्र खुद कर घण्टों से तयार है। मैं कसम खाकर इकरार करता हूं कि आज मैं आफ़ताब निकलने के पेश्तर तेरी दाढ़ी पर थूकूंगा क्योंकि जिस भवानी के ठगों को तूने धमकाया और ठगा है उसी ने तुझे-हम लोगों के हाथ सुपुर्द कर दिया है"। इतना कह कर मैंने उस पर थूक दिया और मेरे तमाम लोग जो मौजूद थे बारी बारी से उसके मुंह पर थूकने लगे।

मैंने कहा "इसे मज़बूत पकड़ो और लाओ तमाखू"। वह भिरनी खूब समझता था, अपने तईं छुड़ाने के लिये बज़हद कोशिश करने लगा, मगर इससे क्या होता है मैंने फ़ौरन् रुमाल उस के गले में दिया और उसी दम उस की जान कालिब से रिहा हो गई।

मैंने कहा "मोतीराम फ़ौरन् दस शख़्सों को साथ लेकर उस मुकाम पर जा, शायद इसने सच कहा हो तो हम लोगों का और भी कुछ माल दस्तयाब हो। जो कोई इसका हाल सुनेगा सोही वाह! वाह! कहेगा"।

लूघों ने फ़ौरन् उसकी लाश को दफ़न कर कब्र पीट बराबर कर दिया और उस जगह को मट्टी से लीप कर चन्द चूल्हे बना आग जला काला कर दिया।

साहब आपही कहिये कि वह बदज़ात इसी लायक था या नहीं मेरी दानिस्त में उसका यह बुज़दिल काम हम लोगों के सादिक रोज़गार के बनिस्बत कहीं हेच और बत्तर था। पस उसने अपने दगेबाजी का नतीजा हम लोगों के हाथों से पाया"।

मैंने कहा "बेशक बदला तो तुमने लिया मगर लूट के लालच से तुमने इन्साफ़ की बेइज़्ज़ती की। तुम्हें हर्गिज़ लाजिम न था कि तुम उसको जांबख़्शी का इकरार कर उसे मारते, यह निहायत छोटापन है?"

अमीरअली ने कहा "साहब मैंने हर्गिज़ उससे यह इकरार नहीं किया था, मगर यह कहा था कि तू वहीं रहेगा और वह वहीं रहा—बल्कि अब तक वहीं है"।

मैंने कहा बेशक अमीरअली, यह तुम्हारे गुफ़्तगू की चालाकी है और इससे सुबूत होता है कि तुम पर मुतलक एतकाद न करना चाहिये। ख़ैर तुम आगे का अहवाल बयान करो, क्या उसने रुपये का पता दरहकीकत सही बतलाया था?

उसने कहा "जी हां, पौ फटने के बहुत पेश्तर मोतीराम ने वापस आकर मुझे जगाया और सोने चांदी के सिक्के, सिकरियां, जोशन, अनन्त और कड़ों का एक ढेर मेरे कदमों पर लगा दिया। यह माल करीब तीन हज़ार रुपये के था और ऐसी एक भी चीज़ उन में न थी जो उसने ठगों से न पायी हो। मोतीराम, पीरखां और चन्द दूसरे शख़्सों ने कई एक माल पहिचाने। इन लोगों ने तमाम ज़ेवर गला डाला और दूसरे मंजिल पर पहुंच कर तकसीम कर लिया। यह माल अच्छा हाथ लगा जिससे हम लोग चन्द दिन के लिये मालामाल हो गये, बल्कि मकान वापस आने तक उसी से बराबर राह खर्च चलता रहा।

मैंने पूछा उस साहूकार का क्या हुआ क्या उसकी खबर सच थी?

अमीरअली ने कहा "जी हां बिलकुल सच, मैं उस का अहवाल आप को सुनाता हूं। उस दिन अलसुबः हम लोग सागर से रवाना हो पड़े और कुछ दूर जाकर मवाफ़िक दस्तूर के गुड़ खाने के लिये सड़क के एक किनारे बैठ गये। हम लोग अभी गुड़ खाही रहे थे कि भेदियों में से एक शख़स आ पहुंचा और यह खुशखबरी लाया कि साहूकार शहर से रवाना हो कर हम लोगों के बहुत करीब आ पहुंचा है और दूसरे शक्स ने जिसका नाम भिखारी था साहूकार की नौकरी इसलिये करली है कि वह बराबर जबलपूर तक साहूकार के सोने पर रात के वक्त पहरादिया करेगा।

मैंने पूछा "वह क्योंकर सफ़र करता है।" भेदिये ने जवाब दिया कि "वह एक मजबूत टट्टू पर सवार है उसके साथ दो टट्टू और भी माल से लदे हैं और साहूकार और भिखारी के सिवाय चार शक्स और भी हमराह हैं"।

मैंने कहा "बहुत अच्छा अब आगे बढ़ो ताकि चन्दरोज तक साहूकार हमलोगों को न देखे और न हम लोग किसी दूसरे से मुलाकात करें।

हम लोग फौरन् रवाना होकर मञ्जिल पर पहुंचे। तीन दिन तक बराबर चुपचाप चले गये और बार २ सगुन देखते थे जो हमेशा उम्दे निकलते और हमलोगों का दिल बढ़ाते थे। चौथे रोज़ हमलोग आहिस्ते २ चलने लगे ता कि साहूकार और उसके लोगों से मिल जावें, कुछ देर बाद वे लोग भी आ गये और भिखारी को उनके साथ देख हम लोग अंदरही अंदर निहायत खुश हुये। साहूकार से मेरी मामूली साहब सलामत हुई, मैं निहायत उम्दी पोशाक पहिने घोड़े पर सवार था और ख़ासा सिपाही मालूम होता था। उसने मुझसे पूछा कि आप लोग क्या काम करते हैं और कहां तशरीफ़ ले जाते हैं? मैंने वही मामूली पुराना जवाब सुना दिया और हम लोग बाहम खुशी बखुशी चल पड़े। साहूकार बदन से मोटा खुशमिजाज और निहायत दिल्लगीबाज़ था रास्ते में हम दोनों किस्से कहानियां कहते सुनते और आपस में हँसते बोलते चले जाते थे। साहब, ताअज्जुब की बात है कि इन हेच और नाचीज बातों से अकसर मुसाफ़िरों में राहोरस्म और दोस्ती पैदा होजाती है और रास्ते की थकावट और तनहाई मुतलक मालूम नहीं होती। पस योंही बातें करते २ मंञ्जिल पहुंचने पर हम लोगों में ऐसी दोस्ती होगई गोया महीनों से साथ सफर करते या बरसों की मुलाकात रखते हों। गांव पहुंचने पर हम लोग निहायत अखलाक से बंदगी कर इलाहदा हुये, वह तो गांव के अन्दर बाज़ार में टिकने गया और हम लोगों ने साबिक दस्तूर अपना खेमा बाहरही खड़ा कर दिया।

जब तमाम लोग जमा हुये मैंने कहा "कल जुमे का उम्दा दिन है इस काम को खतम करना चाहिये"। इस पर सब राजी होगये और आधीरात के वक्त बेलहे और लूघे दोनों रवाना कर दिये गये ताकि वे लोग उम्दा सा मुकाम चुनकर कब्र खोद रक्खें।

दिन चढ़े भिखारी ने आकर खबर दी कि गांव के दूसरे जानिब पर साहूकार साहब आपके इन्तज़ार में ठहरे रहेंगे और मुझे भेजकर आप से

यह इलतिजा की है आप भी फौरन आवें क्योंकि वे आपका साथ पसन्द करते हैं मा सिवाय इसके उन्होंने कहा है कि रास्ते में हम लोगों की हिफ़ाज़त भी ज्यादातर रहेगी।

फिर वह कहने लगा कि "मैंने उसे कुछ खौफ़ भी दिला दिया है और दरहकीकत वह सागर से रवाना होने के वक़्त ही डरता था क्योंकि वह सुन चुका है कि पारसाल चन्द लोग रास्ते में गुम होगये और आज तक उनका कुछ पता न लगा, सो कल आपकी मुलाकात होने पर हमलोग निहायत खुश हुये, और मैंने जमादार साहब! आप की खूब तारीफ़ करके कह दिया है कि इन लोगों के साथ रहने से आपको किसी किस्म का खतरा न रहेगा।

मैंने कहा "खूब किया, तूने अपना काम उम्दे तौर से अंजाम दिया है मैं तुझे हर्गिज़ न भूलूंगा। मगर दोस्तो, साहूकार हमारी इन्तजारी में होगा बेहतर है कि अब हम लोग भी रवाना हों, तुम सब कलही के स्वाफ़िक उसके तमाम लोगों को चारो तरफ़ से घेरे रहना और उनका दिल किस्से कहानियों से परचाये रहना ताकि वे खुश व खुर्रम रहें"।

पस हम लोग वहां से रवाना होकर साहूकार की तरफ़ चले और गरोह के तमाम लोगों ने "जै भवानी" और "जै अमीर अली" की आवाज़ दो तीन मर्तबे दी।

अट्ठाईसवां पर्व्व।

ज्योंही मैं उस मुकाम पर भिखारी के साथ पहुंचा कि साहूकार ने मुझे देखतेही कहा 'राम राम मीरसाहब! मुझे इस बात से निहायत खुशी हुई कि आप ने इस गरीब गुलाम के साथ चलने की इनायत की क्योंकि दरहकीकत आपकी शीरींज़ुबां ने मेरे दिल पर कुछ जादू सा असर कर दिया है कि मेरी तबीयत फिर भी आप से बातें करने की चाहती है"।

मैंने कहा "यह तो आपकी इनायत है बन्दा हर्गिज़ इस तारीफ़ के लायक नहीं"। योंही दो चार बातें कर हम लोग रवाना हुये। रफ़्ते २ मेरे गरोह के लोग अपने नये शिकार के चारो तरफ़ जमा हो गये। मैंने देखा कि हर एक

शख्स अपने मौके और घात से लगा है पस मैं निहायत बेकरारी के साथ इस इन्तज़ार में था कि कोई भेदिया आकर बिल की तयारी की ख़बर दे। साहब, ऐसे मौकों पर ठगों के दिल में एक अजीब तरह का जोश और ख्याल पैदा होजाता है, न कि किसी किस्म का रहम उन मुसाफिरों पर आता हो या अपने काम पर रतूबत पैदा होती हो जैसा कि शायद आप ख्याल फर्माते होंगे, बल्कि उस काम के खतम करने की बेकली और दूसरे मुसाफिरों के आ जाने का खौफ़ गालिब रहता है, और गोकि अब मैं निहायत ढीठा और संगदिल होगया था ताहम मेरा दिल बेचैनी और खतरे से पशेमान था और इसी सबब से मेरा जवाब साहूकार के दिल्लगी के बातों का बेमतलब और उड़ा हुआ होता था क्योंकि मेरा तमाम ख्याल उसी कार की तरफ झुका था। उसने फ़ौरन इस पर ख्याल किया मगर मैं फिर सम्हलकर उसका दिल पेश्तर के मानिन्द हँसी में बहलाने लगा। बातें करते २ मैंने एक बात ऐसे हँसी की कही कि हँसते २ उसके शिकम में बल पड़ गया और उसने कहा "मीर-साहब अब आपने ठीक अपने म्वाफ़िक कहा, कहिये तो आज सुबह सोकर उठने के बाद आपने किसका मुंह देखा था? मैं जानता हूं किसी मनहूस की शकल देखी होगी और इसी से उसका कुछ असर आप पर भी आ गया है"।

मैंने कहा "सेठजी, मैं नहीं जानता कि मैंने आज सुबह किसकी शक्ल देखी मगर आप जानतेही हैं कि इनसान का मिज़ाज हमेशा एकसां नहीं रहता इस वक़्त मेरा ख्याल घरकी तरफ़ चला गया है"।

उसने कहा "मीरसाहब, बस भगवान से यही मनाइये कि हम और आप बख़ैरियत घर को वापस आवें, क्योंकि यह सफ़र का मामला निहायत ख़राब काम है और खास कर मैं इतने दिनों तक इन्तज़ारी करने पर भी घर से अच्छे दिन रवाना नहीं हुआ हूं। अर्सा एक महीने का हुआ कि मैंने सागर से रवाना होने का इरादा किया था मगर जोतिषीयों से पूछने पर उन्होंने मुझे बार बार अटका रक्खा और कहा कि दिन खराब है, खासकर वह दिन और भी बदतर था कि जिस रोज़ मैं रवाना हुआ, मेरी तबीयत उकता गई, मैंने देखा कि यह सब फ़ज़ूल है, बस नारायण से प्रार्थना कर मैं चलता हुआ कि वह हर किस्म के ठग, चोर और डांकुओं से मेरी हिफ़ाज़त करे।"

मैंने कहा "आमीन्—मैं भी दिलोजान से यही दुआ मांगता हूं कि खुदा हम लोगों की हिफ़ाज़त करे, क्योंकि मैं तो अपनी नौकरी पर जाता हूं जहां हज़ारों किस्म के खतरे हैं । आपने क्या कहा कि रास्ते में ठग भी होते हैं? ये लोग कौन और कैसे होते हैं? मैंने तो यह लफ़्ज़ नया सुना है"।

उसने कहा "दरहकीकत मीरसाहब मैं आप से सच कहता हूं। लोग कहते हैं कि ठग एक किस्म के लोग होते हैं जो किसी न किसी बहाने से बिचारे भोलेभाले मुसाफ़िर को अपने दाम में लाकर पीछे से मार डालते हैं। मैंने यह भी सुना है कि उनके साथ चन्द खूबसूरत औरतें भी रहती हैं जो मुसीबतज़दी का बहाना कर सड़क पर पड़ी रहती और राह चलते रहमदिल मुसाफ़िरों से मदद चाहती हैं, अगर कोई मुसाफ़िर कम्बख़्ती का मारा उन की मदद करने गया तो वे उस पर कुछ ऐसा शैतानी जादू डाल देती हैं कि उसकी भागने की तमाम कोशिश बेफ़ायदा हो जाती है और बादज़ां उन औरतों के साथी ठग लोग आकर उसका काम तमाम कर देते हैं। भगवान जाने यह क्या बात है पर इतना तो सच है कि रास्ते में चोर, ठग या किसी किस्म के डांकू ज़रूर लगते हैं क्योंकि कितनेही मुसाफ़िर गुम हो जाते हैं और उनका कुछ भी पता नहीं लगता । मुझे तो किसी किस्म का खौफ़ नहीं है क्योंकि मैं भलेमानसों के साथ में हूं और आप लोगों का शुमार भी ज्यादा है, कौन शैतान ऐसा होगा जो हम लोगों पर हमला करने की हिम्मत करे"।

मैं साहूकार का ठगों के बारे में यह ख्याल सुनकर अन्दरही अन्दर हँसता था और समझ गया कि बेशक उन मुसाफ़िरों के गुम होने का सबब गनेशा जमादार होगा। मगर मैंने मुस्करा कर जवाब दिया "आह! कुछ पर्वाह नहीं दोस्त! ये ठग लोग जैसा कि आप कहते हैं कभी २ किसी एके दुक्के गरीब मुसाफ़िर को मार लेते होंगे, मगर हमारे जैसे गरोह को छूने की भी हिम्मत किसी की न होगी और इनशाअल्ला अगर कोई नज़र आगया तो मैं उन्हें खूब मज़ा चखाऊंगा मुझे इन बदज़ातों के कीमा बनाने का बहुत शौक है। मैं एक या दो मर्तबः ऐसा कर भी चुका हूं, मैंने कभी नहीं देखा कि ये लोग तलवार खींचने पर मुकाबिल खड़े रहें । मगर वह देखिये हम लोगों का

एक शख्स साम्हने बैठा है, मुझे ताअज्जुब है कि वह हम लोगों से आगे क्यों चला गया। अभी इससे पूछता हूं। मैं ख्याल करता हूं कि रास्ते में आराम करने की गरज़ से यह अलस्सुबह चल पड़ा होगा"। योंही बातें करते २ मैं उसके पास पहुंचा, उसने उठ कर मुझे और साहूकार को सलाम किया, मालूम पड़ता था कि वह निहायत थका है पस उसने अपना काम बखूबी अंजाम दिया।

मैंने कहा "क्यों अमीरसिंह, तुम हम लोगों से इतने पेश्तर क्योंकर चले आये ?"

उसने उसी वक्त मुस्तैदी से जवाब दिया 'ओह, कल शाम को मेरे पैर में एक कांटा चुभ गया था, और चूंकि मैंने ख्याल किया कि शायद आप मेरे लिये न ठहरें तो मैं अपने चन्द दोस्तों के साथ जो मेरे हमराह चलने को राज़ी हो गये धीरे २ आधीरात को रवाना हो गया, मगर अब मैं आगे नहीं चल सकता, सो यहां आपही लोगों के इन्तज़ार में ठहरा हुआ हूं कि मुझे एक टट्टू मिलता तो मैं आज की मंजिल पर बआसानी पहुंच जाता'।

मैंने कहा "अच्छा जिस घोड़े पर मेरा असबाब लदा है उसी पर सवार हो जा, मंज़िल पहुंचने पर किसी हज्जाम को तेरा पैर दिखला दिया जायगा; मगर तेरे और साथी कहां है ?"

अमीरसिंह ने कहा "कि वे लोग मुझ से यह कहकर आगे गये हैं कि यहां से आध कोस के फ़ासले पर एक छोटा सा चश्मा बहता है जहां चल कर हम लोग हाथ मुंह धोते हैं, मीरसाहब के आने पर यह हाल उनसे कह दीजियो"।

मैंने कहा "बहुत अच्छा, मुझे यह सुन कर निहायत खुशी हासिल हुई कि पानी नज़दीक ही मिलेगा. वहां हम लोग घोड़े से उतर ज़रा ताज़े हो लेंगे क्योंकि यह मंज़िल बहुत कड़ी है। कहिये सेठसाहब! आप की क्या राय है ? आप हिन्दू लोग भी तो हम मुसलमानों की मानिन्द सुबह की वज़ू ज़रूर करते हैं ?"

उसने कहा "हां, हां, बड़े खुशी की बात है मेरा भी मुंह सूख रहा है क्योंकि मैंने अभी तक दातन नहीं किया, वहां दम भर ठहर कर सब काम

कर लिया जायगा। मासिवाय इसके मेरा पेट भी खाली है, और मेरे पास थोड़ी मिठाइयां मौजूद हैं जो मैं आप को थोड़ा दूंगा। मीरसाहब, बगैर कुछ अन्दर दिये सफ़र ठीक नहीं होता"।

मैंने जवाब दिया "आपने खूब कहा, मैं निहायत शुकरगुज़ार और ममनून होऊंगा, मैं भी अकसर अपने साथ मिठाई रखता हूं मगर अबकी मर्तबः लाना भूल गया"।

साहब, भेदिये ने ठीक कहा था, थोड़ी ही देर बाद हमलोग उस चश्मे पर जा पहुंचे, देखते क्या हैं कि पानी के किनारे हमारे चन्द लोग बैठे जल्दी २ कुछ रोटियां जो वे साथ लाये थे खा रहे हैं?"।

मैंने आतेही बिलहे से पूछा "बिल मञ्जेह?' *।

उसने कहा "मञ्जेह"।

साहूकार ने कहा "आपने क्या पूछा? अगर इन लोगों ने आपका प्याला साफ़ न किया हो तो आप मेरे गिलास में पी लीजिये कुछ पर्वाह नहीं, पीछे से मांज लिया जायगा।

मैंने कहा "नहीं सेठजी, यह आपकी ऐन इनायत है, मगर इसने मेरे लिये प्याला साफ़ कर रक्खा है"।

खैर हम सब लोग घोड़े से उतर पड़े, मेरे आदमी एक एक करके पानी में जा हाथ मुंह धोने लगे, कोई दांत साफ़ करने और कोई उस साफ़ सुथरे पानी को चुल्लू से उठा पीने लगा, मगर कोई भी शख्स अपने घात से हटा न था और सब झिरनी के इन्तिज़ार थे।

इतने में एक बिलहे ने मुझे एक लोटा पानी का मुंह धोने के लिये ला दिया मैंने उसे पूछा "क्या बिल यहां से दूर है?"।

उसने कहा 'जी नहीं, यहां से एक तीर के फ़ासले पर उस साह्ननेवाली झाड़ी में है। वह मुकाम बहुत उम्दा है, इसी जगह गनेशा जमादार ने परसाल एक बहुत अच्छा बनिज किया था। मगर अब देर न कीजिये, आफताब ज्यादा चढ़ गया है और आगेवाले मंज़िल के मुसाफिर आते होंगे, क्योंकि इस सड़क पर फ़कत यही बहता पानी है और सभी तरोताज़ा होने के लिये यहां आते हैं।

* बिल तयार है?

मैंने कहा "तो मैं तयार हूं, जब तुम मुझे साहूकार के पास पहुंचा देखो तो समझना कि मैं झिरनी दूंगा, मैं देखता हूं कि हम लोग तयार है"। पस इतना कह मैं साहूकार के पास जा रहा।

ज्योंही मैं मोतीराम के पास से होकर निकला कि उसने मुझे अहिस्ते से कहा "आप झिरनी क्यों नहीं देते ? हम सब आपही के इन्तज़ार हैं"।

मैंने कहा 'अच्छा तयार रहो मैं अपने मुकाम पर जाता हूं"।

साहूकार का एक शख्स जो मोतीराम के पास खड़ा था मेरी इस अजनबी ज़ुबान को सुन मेरी तरफ़ फिर कर देखने लगा मगर वह उसी दम बैठकर अपनी धुन में दांत साफ़ करने लगा, उसके पीछे दो शख्स उसे इस तकलीफ़ से रिहा करने के लिये खड़े थे।

मैंने कहा "कहिये सेठजी ! मुझे ताअज्जुब होता है कि आप आगे क्यों नहीं बढ़ जाते यहां का पानी तो इन आगेवालों ने बहुत गदला कर दिया है। आइये मैं आपको एक उमदा सा मुकाम दिखला दूं जहां का पानी साफ़ है'।

उसने कहा "ठीक है, आप बजा फर्माते हैं मगर मुझे इसका ख्याल ही न हुआ था"।

मैंने उसे अपने साथ लेजाकर साफ़ पानी बतला दिया और वह झुक कर मुंह धोने में मशगूल था कि मैंने झिरनी दी।

साहब, गोकि मुद्दतों से मेरा रम छूटा हुआ था मगर रूमाल देते ही वह फ़ौरन् मुर्दा हो मेरे कदमों पर आ रहा।

हम लोगों से एक बड़ी भारी बेवकूफ़ी देर करने की हुई और आइन्दे से मैं इस बारे में बहुत होशियार था। इस कामके ख़तम करने पर हर एक शख्स फिर अपना हाथ मुंह धोने लगा गोया कुछ हुआ ही न था और लाशें तमाम बालू में ज्यों की त्यों पड़ी थीं। इस मर्तबः भी वही पेश्तर जैसी वार्दात हुई। देखा कि दो मुसाफ़िर चले आते हैं, पस मैंने फ़ौरन् उन लाशों पर चादर डाल दिये जिससे मालूम हो कि ये लोग सोये हैं मैंने अपने लोगों से भी कह दिया कि थकावट के बहाने से चंद शख्स बैठ और चंद लेट जावें। उन्होंने ऐसा ही किया और इतने मे वे दोनों मुसाफ़िर भी आ गये। वे लोग निहायत गरीब हर्गिज़

मारने काबिल न थे और मैंने पीरखां से सलाह किया कि इन्हें छोड़ देना चाहिये मगर उसने कुछ न सुना बल्कि कहने लगा।—

"क्या इन्हें छोड़ दें? आप को कुछ खफ़ान हुआ है क्या? क्या आप इतना भी नहीं समझते कि इन लोगों ने हमारा भेद पा लिया है? क्या ऐसा भी कोई शख्स बेवकूफ़ होगा जो मुर्दों को निगाह के रूबरू देख कर उन्हें पहिचान न सके? चाहे कैसा ही उन्हें चादर से क्यों न ढक दीजिये। वह देखिये हमारे चन्द शख्स उनसे बातें कर रहे हैं, ये दोनों सच्चे बनिज हैं और देवी ने इन्हें हमारे लिये भेज दिया है।

मैंने कहा 'जैसी तुम्हारी मर्ज़ी पर शायद अभी और लोग पीछे हों"।

उसने कहा "अगर होंगे भी तो क्या पर्वाह है, मालूम पड़ता है कि ये लोग मंज़िल से रातही को रवाना हुये हैं ताकि यहां इतने जल्द पहुंचे, अच्छा चलिये इनसे पूछें तो सही" इतना कह कर हम लोग उनकी तरफ़ बढ़े।

मैंने पहुंचते ही कहा "सलाम साहबो, आप लोग इतने सुबह कहां से आते हैं? अगर आप लोग मंज़िल के उठे चले आते हों तो मैं समझता हूं कि आपने बहुत तेज़ सफ़र किया। हम लोग भी वहां आज ही पहुंच जांयगे, कहिये गांव कितनी दूर है?"

उसने कहा "सात कोस पक्का, लेकिन वहां पहुंचते तक सूरज बहुत तेज़ हो जायगा, हम लोगों की जल्दी है हम ठहर नहीं सकते"।

मैंने कहा "खड़े रहो, खबरदार, एक कदम आगे मत बढ़ना, यह बतलाओ कि जिस मंज़िल पर तुम रात टिके थे वहां कितने शख्स और थे"।

वह दूसरा शख्स मेरे इस सवाल पर घबड़ा गया और खौफ़ से कहने लगा "हम लोगों के सिवाय दो शख्स वहां और थे मगर आप यह क्यों पूछते हैं?"

मैंने पूछा "और ज्यादा तो नहीं?"।

"जी नहीं" उसने कहा "हम चारो शख्स जबलपुर से साथही चले और एकही मुकाम पर टिकते आये हैं"।

मैंने पूछा "वे दोनों तुमसे कितने पीछे हैं?"।

उसने कहा "वे भी आतेही होंगे, क्योंकि सब एकसाथही चले थे मगर हम दोनों जरा आगे बढ़ आये"।

मैंने कहा "अच्छा यहीं बैठ जाओ, जब तक वे न आवें"।

उन दोनों ने कहा "क्यों ? आप मुसाफ़िरों को रोकनेवाले कौन हैं ? हम लोग बेशक आगे जांयगे" ?

मैंने कहा "खबरदार, समझ कर आगे कदम बढ़ाना, तुम लोगों ने हमारे काम में दखल दिया तो बेशक इसकी सजा पाओगे"।

उसने कहा "सजा क्या ? क्या तुम लोग चोर हो ? अगर ऐसा है तो जो हमारे पास है ले लो और हमें जाने दो"।

पीरखां ने कहा "हम चोर नहीं हैं, चुपचाप खड़े रहो, हमलोग उस से भी बढ़कर हैं"।

उसने अपने दूसरे साथी से कहा "उनसे भी बढ़ कर ! तब तो भई हम दोनों गये ! ये लोग ठग हैं, मैंने तो तुमसे देखते ही कह दिया था कि यहीं ठहरो, ये लोग अपना काम कर रहे थे और वह देखो उन लोगों की लाश पड़ी है जिन्हें इन लोगों ने मारा है"।

मैंने कहा "दुरुस्त है, कम्बख्तो तुम भी फौरन् इन्हीं लाशों के साथ शामिल कर दिये जाते हो, जो तुम्हारे किस्मत में लिखा है उसे टालने की कोशिश करना लाहासिल है"।

साहब, मैंने अपना रुख फेर लिया क्योंकि इन बिचारे बेकुसूरों को मारने पर मेरी तबीयत हर्गिज़ ख्वाहिश न करती थी। वे छोड़ दिये जाते, मगर पीरखां का कहना ठीक था कि उन्होंने लाशों को पहिचान लिया था गोकि वे सब चादर से यों ढके थे गोया सोये हों। वे सब मिट्टी के ढेर के मानिन्द पड़े थे और चूंकि उनमें मुतलक दम न था चादर ज़रा भी न हिलती थी, पस एक निगाह से इनसान पहिचान सकता था कि ये मुर्दे हैं। मगर मैंने वह ख्याल दिल से हटा दिया, सबब इसका यह था कि अगर मेरे साथियों को यह बात मालूम होती कि मेरी तबीयत ऐसी है तो मेरा वह दबदबा उन पर से जाता रहता।

मैंने कहा "पीरखां, तुमारा कहना सही था कि इन्होंने लाशों को देख लिया, पस अब इन्हें भी खतम करना चाहिये—मैं निहायत खुश होता अगर

ये न आगये होते और इन सुस्त लुचाइयों ने अपना काम फौरन् अंजाम दिया होता, तो वे बिचारे बच भी जाते और हमारा काम भी बखूबी हो जाता, क्योंकि ये हर्गिज़ मारने लायक नहीं हैं"।

उसने कहा "मीरसाहब, आप बजा फर्माते हैं लेकिन अगर तमाम दुनियां की भी नियामत आप मेरे रूबरू रख दीजिये तो भी मैं इन्हें नहीं छोड़ सकता बेहतर होगा कि इन्हें फौरन् इस जिन्दगी की तकलीफ़ से रिहाई दी जाय"।

मैंने कहा "बेहतर है इन्हें भी उन सभों के साथ दफन् कर दो, मैं उनमें से एक को रूमाल दूंगा जो आगे आ रहे हैं। ये कम्बख़्त तो मारे खौफ़ के यों-ही अधमुये हो गये हैं, मैं सब से आगे बढ़कर उन दोनों से मुलाक़ात करता हूं, मुझे ऐसे शिकार से सख़्त नफ़रत है"।

पीरखां एक ठग को साथ लेकर उन कम्बख़्तों के पास पहुंचा जो अब तक ज़मीन पर वहीं बैठे थे जहां हमलोग उन्हें छोड़ गये थे। मैं उनकी हालत देख रहा था, जब उनसे खड़े होने के लिये कहा गया तो वे यों उठ खड़े हुए गोया काठ के पुतले हों, उन दोनों ने अपनी गर्दन रूमाल निकालने पर खुद झुका दी और बगैर चूं किये यों मारे गये जैसे कस्साई के छुरी तले बकरे मारे जाते हों। बाकी के दोनों मुसाफिर भी जैसा कि उसने कहा था बहुत जल्द आ पहुंचे।

मैंने कहा "मोतीराम, इन कम्बख़्तों का भी काम इसी दम तमाम करना चाहिए, एक को तुम लो और दूसरे को मैं लेता हूं—देखना ये दोनों एक लफ्ज़ भी न बोलने पावें।"

उसने कहा मैं तयार हूं, "बस इतनी बातें कर हम दोनों उठ कर और सड़क के किनारे टहलने लगे।

दोनों मुसाफ़िर आ गये। उनमें से एक नौजवान और दूसरा बुड्ढा शख़्स था। मैंने नौजवानही को पसन्द किया, ज्योंही वह मेरे पास से जाने लगा कि एक ठग ने उसका हाथ पकड़ा और मैंने फौरन् रूमाल दे उसका काम खतम किया। उधर दूसरे को मोतीराम ने तमाम किया ये दोनों भी

पीरखां ने कहा "मगर अब आप खामोश रहिये, क्योंकि हकीम साहब हुक्म दे गये हैं कि आप के पास किसी किस्म का शोर व गुल न हो और यह भी फ़र्मा गये हैं कि अगर आपकी आंख खुले तो मुझे फ़ौरन् इत्तला दी जाय ताकि मैं उस दवा को आकर दूं जो मैं इनके लिये तयार करूंगा और जिससे जल्द सेहत पाने की उम्मेद है । मैं अभी जाकर उन्हें यह खुशखबरी सुनाता हूं।"

थोड़े अर्से के बाद पीरखां एक जईफ़ मुअज्जिज़ हकीम के साथ वापस आया जिसने मेरी नब्ज़ देखकर जिस्म पर हाथ रक्खा और कहा कि अब बहुत आराम है किसी क़िस्म का खतरा नहीं, पर चूंकि यह बुखार बसबब सर्दी के है जो हनोज़ शिकम में क़ायम है मैं उस दवा को दिया चाहता हूं जिसका ज़िक्र मैंने आप से किया था । मैंने उसे तयार कर लिया है और चूंकि उसमें तमाम चीजें गर्म हैं यह दवा सर्दी को निकाल पर पसीना लावेगी और इनशाअल्ला ताला कल तक इनकी हालत बिलकुल तबदील हो जायगी गोकि कमज़ोरी कुछ दिनों तक बनी रहेगी।"

काढ़ा तयार किया गया और हालां कि वह निहायत बदमज़ा था मगर मैं आंखें बन्द कर उसे घोंट गया और हकीम साहब के हिदायत के म्वाफ़िक़ अपने तईं रज़ाई से लपेट पड़ रहा जिसके ऊपर और बहुतेरे कपड़े डाल दिये गये। थोड़े ही अर्से के बाद मेरा बदन पसीने २ होगया और जब हकीम ने, जो मेरे बग़ल में बैठा था देखा कि दवा का असर होगया है उसने एक एक करके कपड़ा उठाना शुरू किया और जब मेरा तर कपड़ा हटाया गया मैं फ़ौरन् गाढ़ी नींद में सो गया और सुबह तक योंही पड़ा रहा, आंख खुली तो क्या देखता हूं कि दिन रौशन है और आफ़ताब ज़ियादा चढ़ गया है।

नींद खुलने पर मुझे कुछ फ़रहत जान पड़ी और मैं उठ बैठा मगर मेरा सिर घूमता था और मैं चक्कर खाकर गिर पड़ा। मैंने फिर उठने की कोशिश न की मगर मेरी तबीयत आराम थी मुझे मालूम पड़ता था गोया मेरी बिमारी रफ़ा होगई और मैंने हकीम का शुक्रिया अदा किया । थोड़ी देर बाद मुझे भूख लगी और हकीम साहब के हिदायत के म्वाफ़िक़ कुछ खिचड़ी खाकर तरोताज़ा हो गया।"

दो दिन के बाद मेरी तबीयत बखूबी बहाल होगयी और अब मेरी ख्वाहिश अपने मकान की तरफ चलने की हुई मगर घोड़े पर सवार होने की कौन कहे मैं बमुश्किल दूसरे के मदद से चन्द कदम चल सकता था । पीरखां ने कहा कि मैं इलिचपूर जाकर कोई पालकी या डोली ले आता हूं ताकि आप चन्द मंजिल तक उसी में सफर करें या जहां तक दरकार हो कहारों को अपने हमराह रक्खें । मैंने कहा बेहतर है जैसी तुम्हारी मर्जी ।

वह फ़ौरन् रवाना होगया और एक पालकी मय चन्द कहारों के ले आया, पस दूसरे दिन हकीम साहब की नज़र और बिदाई देकर मैं अपने दिलेर व जवांमर्द साथियों के हमराह रवाना हो पड़ा ।

हम लोगों ने बुरहानपूर का वह रास्ता लिया जो बरार की तराई से होता हुआ पहाड़ के नज़दीक से जाता है, और जलगांव पहुंचने पर मुझे इस कदर ताकत मालूम हुई कि मैंने कहारों को बिदा कर घोड़े की सवारी की और आगे का रास्ता लिया ।

साहब, मुद्दत की सख़ बीमारी के बाद घोड़े की सवारी भी क्या ही राहत और फ़रहत की चीज़ है कि मैं आपसे क्या अर्ज करूं, इसका मजा वही शख्स जानता है जिसे खुदा नख़ास्ता ऐसा मौका पड़ चुका है । उस वक्त घोड़ा भी अपने मालिक के आराम होने पर खुश जान पड़ता था । वह भी मेरे ही मानिन्द हरा था और उस दिन के म्वाफ़िक मैंने कभी घोड़े की सवारी का मजा फ़िर न पाया । सुबह की ठंढी२ हवा मेरे सूखे रुखसारों पर गोया पंखा झलती थी, जिसके बायस मेरा घोड़ा भी उछलता कूदता खूबसूरती के साथ चला जाता था, कभी मैदान में अपनी अच्छी चाल दिखलाता और कभी गरोह में जा मिलता; गोया मेरे सेहत पाने की खुशी में नाच रहा था ।

बुरहानपुर तक जहां उस गांव से रवाना होने पर दसवें रोज़ हम लोग पहुंचे कोई शिकार दस्तयाब न हुआ, और सच तो यों है कि हम लोगों ने तालाशही न किया । यहां हम लोगों ने शहर के एक पुराने सराय में उमदा डेरा पाया, और मेरा यह इरादा हुआ कि जब तक यहां से आगे बढ़ने के लिये कोई शगल दस्तयाब न हो यहीं मुक़ीम रहना चाहिये । हर रोज मुख़-

लिफ़ बाज़ारों में सूदे लोग शिकार की तालाश में भेजे जाते मगर सात रोज़ तक हमारी कोशिश बेकार हुई, यहां तक कि मुझे इस बात का सख़ खतरा हुआ कि शर्फ़न के खून ने जो मेरे हल्फ़ी वादे के बर्खिलाफ़ किया गया था हम-लोगों पर हमारी सरपरस्त भवानी देवी की नाराज़ी नाज़िल की है, याने मुझे इस बात का खौफ़ हुआ कि मेरी खुशकिस्मती ने मुझे तर्क कर दिया, पस मैंने उसी दम हुक्म दिया कि देवी की कुर्बानी धूमधाम से की जाय, और सगुन देखेजायं ताकि आइन्दे की कार्रवाई के लिये भवानी की मर्जी दर्याफ़ हो।

कुर्बानी वगैरह के बाद सगुन उमदे निकले, जिसपर मोतीराम ने जो इस कार का मुन्तज़िम था निहायत खुशी से कहा कि सगुन बहुत ही उमदः है; हमलोगों को कोई अच्छा बनिज जल्द मिलेगा, वर्नः भवानी के तरफ़ से ऐसी मिहरबानी ज़ाहिर न होती।

दूसरा दिन भी गुज़र गया मगर सूदों ने कुछ खबर न दी, तीसरे दिन दोपहर के वक्त मोतीराम ने आकर कहा "मीरसाहब! आप जानते होंगे कि यह मुकाम बसबब निहायत गुलज़ार होने के रोकड़ियों का अड्डा है जो बम्बई से रुपये लाते और मालवे में अफ़यून खरीदने जाते हैं।

मैंने कहा "हां! मगर इससे क्या? मैंने अपने वालिद से भी इसका ज़िक्र सुना था जिन्होंने चलते वक्त मुझे यह फ़र्माया था कि उस मुल्क की सैर भी करते आना, वहां बनिज की अच्छी उम्मीद है।"

उसने कहा "तो मैं चाहता हूं कि आप और पीरखां दोनों मेरे साथ चलें आप लोगों की निगाहें तेज़ हैं मैं अभी आठ शख्सों को देख आया हूं। पेश्तर भी मैं इसी फ़िर्केवालों को मार चुका हूं, और मैं ख्याल करता हूं कि इनके रोकड़िये होने के बारे में मेरा गुमान गलत नहीं है।"

मैंने कहा "अच्छा मैं चलता हूं"। पस पीरखां और मोतीराम को साथ लेकर मैं उन शख्सों को देखने चला जिनका ज़िक्र मोतीराम ने किया था।

देखता क्या हूं कि वे सब एक खाली दूकान में बैठे हैं चूंकि ये लोग अज़-हद चौकन्ने और दूरन्देश होते हैं यह बात निहायत ज़रूरी थी कि उनके दिल में किसी तरह का शुबहा न उठने देना चाहिये, इसलिये हमलोग क-

माल से मुंह ढके हुये तेज़ी के साथ निकल गये, तौभी कनअखियें नगाहों से मैंने एकही मर्तब: में उनके वजह और ढंग से पहिचान लिया कि ये लोग रोकड़िये हैं। उसके साथ एक शुतर भी था और यह ठीक मौसिम था कि वे लोग नगद रुपया लेकर मालवे के पोश्त बोनेवालों को पेशगी देने जाते थे क्योंकि फिर इसके एक महीने बाद इस खेती का मौसिम जाता रहता।

अब तो मुझे पूरा यकीन हो गया कि ये रोकड़िये हैं मगर इनसे रावरस्म क्योंकर करना चाहिये, इस बारे में कितने ही ख्याल मेरे दिल में उठते और फिर आपसे आप जाते रहते। टहलते २ मैं अपने साथियों के साथ दर्या की तरफ़ जा निकला जहां हमलोग अक्सर हवाखोरी के लिये जाया करते थे। वहां सीढियों पर बैठ मैंने एक तदबीर सोची और उनसे कहा—

"दोस्तो, मैं ख्याल कर रहा हूं कि इन्हें क्योंकर हाथ पर चढ़ाना चाहिये आप जानतेही हैं कि इनकी होशियारी और दुरन्देशी मशहूर है।"

दोनों ने सिर हिला दिया। मैंने कहा "अच्छा, इस तदबीर पर आप लोग क्या कहते हैं? पीरखां! तुम और हम दोनों मुसाफिर बनें, अव्वल तो सराय को चलें वहां अपने घोड़ों पर गर्द गुब्बार डाल मैले कुचेले कपड़े पहिन लें और तब एक भरपूर लदे हुए टट्टू को मय दो शख्सों के हमराह लेकर शहर के दूसरी तरफ़ चलें और पुराने महल के नीचेवाले फाटक से बारिद हों, और थकने का बहाना कर इन्हीं के करीब टिकने का सामान करें। इस तरह हमलोग बाआसानी इनसे हिलमिल जांयगे और इन्हें भी किसी किस्म का शक वा शुबहा न होगा। मोतीराम, तुम्हें मैं गरोह की सुपुर्दगी में छोड़ता हूं और मौका पाकर मैं तुम्हारे पास इत्तला भेज दूंगा कि हमलोग किस तरफ जानेवाले हैं। उस वक्त जैसा मौका देखना वैसा करना मगर ऐसी तदबीर लगाना कि दो दो तीन तीन करके तुम्हारे गरोह के लोग मेरे पास आते जांय और चन्द लोग आगे निकल जावें ताकि हमलोग उनसे जा मिलें, इसतरह गोकि हमारी गरोह छितरा जायगी मगर चन्द मंजिलों के बाद इनशाअल्ला इस काम को अंजाम देने के लिये हमारे साथ काफी लोग हो जांयगे। इस अर्से में हमलोग आपस में पैगाम भेजते रहेंगे, ताकि इस कार के खतम होतेही सब

लोग जमा होकर मकान का रास्ता लेवें। मगर चाहे जो हो एक मंजिल से ज्यादा पीछे मत रहना और ऐसी हिकमत करना कि हमारे रवाना होतेही तुम उस मंजिल पर पहुंच मुकीम हो जाया करना। अब कहो दोस्तो यह तदबीर कैसी है? और अगर इससे भी उमदा कोई दूसरी तर्कीब मुमकिन हो तो बयान करो।"

दोनों ने कहा "यह सलाह निहायत पसन्दीदः है, फिर क्यों न हो आप के सिवाय ऐसी तदबीर कौन निकाले, पस अब देर न करना चाहिये।"

हमलोग उसी दम सराय को लौट आये, और सिपहर के क़रीब में और पीरखां दोनों, जंगली और दो ठगों को साथ लेकर थके हुए मुसाफिरों का सा भेस बनाये गर्द गुब्बार से भरे, बुरहानपुर के दक्खिनी फाटक से शहर के अन्दर वारिद हुए और जायेकयाम की तलाश में इधर उधर घूमने लगे। हमलोग उन्हींके साम्हने होकर दो तीन मर्तबः एक तरफ़ से दूसरे तरफ़ गुज़रे, इस बहाने से कि जिधर जातेहैं टिकनेकी जगह नहीं मिलती। आखिरकार मैं घोड़े की पीठही पर उनके पास पहुंचा और एक शख्स से जो निहायत लम्बा और मजबूत था और जिसकी मोछें बहुत खूबसूरत और बड़ी थीं कहने यों लगा—

"यारो, आप लोग भी हमारेही जैसे मुसाफिर मालूम होते हैं, पस अल्लाह के लिये थोड़ी सी जगह हमें भी देते कि हमलोग भी एक कोने में अपनी शतरंजी बिछाकर पड़ रहते। आपने देखाही होगा कि हमलोग कई मर्तबः इधर उधर जगह की तालाश में गये मगर कोई भी खुदा का बन्दा नहीं कहता कि आइये उतर कर दम भर आराम कीजिये, बल्कि लोग खाली मुकामों में भी जगह देनेसे इनकार करते हैं, खुदा ऐसे बदज़ातों को गारत करे"

उसने कहा "सराय को चले जाइये, वहां बहुत जगह है आप लोगों को वहां सब बात का आराम रहेगा।"

मैंने कहा 'बेशक, मगर हमलोग वहां से देखते आये हैं, वह भरी है करीब चालीस या पचास आदमी वहां टिके हैं जिन्होंने हमको जगह न दी। सच तो यों है कि इन्हीं लोगों को उनका साथ पसन्द न था क्योंकि हमारे पास जोखिम की बेशकीमत चीजें हैं। उनकी शक्ल तो चोर और डाकुओं की सी मालूम पड़ती थी— क्यों भई मैं ठीक कहता हूं न?"

पीरखां ने जवाब दिया "बजा फ़र्माते हैं, कौन जानता है कि अगर हम वहां टिक गये होते तो कोई हमारी गर्दनहीं मार गया होता?' फिर उसने निहायत संजीदगी से आस्मान की तरफ़ निगाह उठाकर कहा "रहमत अल्ला की है कि सरांय तमाम भरी थी वर्नः जैसे हमलोग थके थे, कहीं भी जगह पाने से टिक जाते, मैं तो बमुश्किल अब घोड़े पर बैठ सकता हूं।"

मैंने उनसे कहा "तो आप लोग हमारी हालत देखतेही हैं। गोकि आप हिन्दू हैं मगर इतनी इनायत से आप हर्गिज इनकार न करेंगे। शाम हुई जाती है, और हमलोग तमाम दिन के सफ़र से थके हैं, फ़कत थोड़ा सा खाना खाकर कहीं आराम से पड़ रहेंगे और नींद आ जायगी।

उसने कहा "चूंकि आप लोगों को यहां से भी टाल देना निहायत ना-शाइस्तगी होगी, खैर आइये, उतरिये।" इतना कह उसने अपने एक साथी से कहा "दुर्जन, ज़रा तुम और दो एक शख्स मिल कर ऊंट की काठी और उन गठड़ियों को इधर तो खसका दो ताकि इन भले आदमियों को यहां जगह हो जाय।"

ज्योंही वे लोग गठड़ियां उठाने लगे रुपयों की झनझनाहट मेरे कान में आई।

हम लोग उतर पड़े और थोड़ेही अर्से में आदमीयों ने घोड़ों को मल और खरहरा कर, खाना तयार किया क्योंकि उस दिन हमलोग जान बूझकर भूखे रह गये थे। खा पीकर रोकड़ियों में जा बैठे और इधर उधर की बातें करने लगे। यह मालूम करने के बाद कि वे किसतरफ़ जाते हैं हम लोगों ने आपस की हिफ़ाज़त के लिये साथही सफ़र करना मंजूर किया और यों हिलमिल गये गोया बराबर एक साथही चले आये हों। हमारी वज़ह, घोड़े और हथियारों से उन्हे एतकाद हो गया कि हम लोग सिपाही हैं क्योंकि मैंने उनसे ज़िक्र कर दिया था कि हम लोग होलकर सर्कार के नौकर हैं और पूना से वापस आते हैं जहां हम लोग पेशवा साहब के पास पैगाम लेकर गये थे, और हमारे पास न कि फ़कत सरकारी कागज़ातही हैं मगरचन्द बेशकीमत हुण्डियां भी साथ में मौजूद हैं। इसके सुबूत में मैंने अपने अंगरखें मे से एक बण्डल

कागजों का निकाला और उन्हे अरोचस्म से लगा कर बाजीराव की सखावत और दिलेरी की तारीफ़ कर यह बयान करने लगा कि वे हमारे होलकर सरकार से निहायत दोस्ताना वर्ताव रखते हैं।

यह मेरी उस्तादी थी और यह ख्याल मुझे सरायही में हुआ था, पस मैंने जल्दी से चन्द रद्दी कागजात और हिसाब के पर्चे वगैरह एकही मे लपेट उन पर अपनी मोहर जो किसी रजवाड़े की मोहर से कम न थी लगादी। अल्लाह जानता है साहब, जैसा मैंने कहा उन्हें वैसाही एतकाद हो गया और वे मुझसे पूछने लगे कि 'आपकी दानिश्त में क्या आता है? क्या यह मुमकिन, है कि होलकर और पेशवा दोनों मिल कर फ़िरङ्गियों को मुल्क से निकालने की कोशिश करें।' मैंने इसका जवाब निहायत मुहमिल तौर से दिया जिस्से यह झलकता था कि हां मुमकिन हो सकता है, और उसी दम वह बात उड़ा कर फिर बाजीराव की इनायत और मिहरबानी का जिक्र करने लगा, बल्कि अपना घोड़ा दिखला मैंने बयान किया कि यह जानवर पेशवा साहब की मिहर्बानी का नमूना है। उन सबों ने कहा बेशक यह घोड़ा भी काबिल पेशवा साहब और आपकी इनायत के है। थोड़ी देर तक योंही इधर उधर की बातें करते रहे और बादज़ां ते करने दूसरे दिन की मंजिल के जो आठ कोस की थी वे सब जाकर सो रहे, फ़कत दो शख्स नंगी तलवार से खज़ाने का पहरा देते थे और सबों को यही एतकाद था कि वे लोग किसी मुअज्जिज़ लोगों के साथ हैं।

अब के वक्त सोने के पेश्तर मैंने जंगली को मोतीराम के पास पैगाम लेकर भेजा और उसे तमाम अहवाल रमासी ज़ुबान में समझा दिया।

उसके रवाना होजाने पर रोकड़ियों के जमादार ने मुझसे पूछा "यह अजीब तरह की बोली है, क्यों साहब यह कौन ज़ुबान है?"

मैंने लापरवाही से जवाब दिया "यह तेलगू ज़ुबान है, मैंने इस लड़के को हैदराबाद में कुछ देकर खरीदा था, यह मेरा खिदमतगार है, यह हमारी हिन्दी ज़ुबान समझता है मगर बोल नहीं सकता"।

शायद यह काम अक़्लमन्दी से बईद था मगर मैंने इस लापरवाही के साथ

जवाब दिया था कि उन्हें यही गुमान हुआ कि मैंने उस लड़के को किसी ऐसे वैसे काम पर भेजा है, और दरहकीकत मैंने उस्से कह भी दिया था कि वापस आते वक़्त कुछ तम्माखू और पान लेता आइयो और चूंकि इस मुकाम से सराय की दूरी बहुत कम थी उसके आने जाने में मामूली वक़्त से ज्यादा लगने का खतरा न था।

वह पान तमाखू लेकर वापस आया और कहने लगा कि वे लोग तयार हैं मगर बहुत से लोग वहीं रह जांयगे फकत सात निहायत उम्दे शख्स गुरदत्त के मातहत रवाना होने को तयार थे; बाकी के तमाम लोग एक भेदिये को उस मुकाम पर छोड़ कर जहां कि हम लोग डेरा करेंगे बढ़तेही चले जांयगे।

मुझे इस खबर से निहायत आसूदगी हासिल हुई, और इस कार के कामयाबी का मुझे इस कदर पुख्ता एतकाद था कि मैं अपनी तमाम इज्जत की शर्त बद सकता था की मैं तीन दिन के अर्से में रोकड़ियों का काम तमाम करूंगा। दूसरे दिन सुबह को हम लोग रवाना हो पड़े और दो रोज़ तक हमारा एक भी शख्स नज़र ना आया।

पीरखां ने कहा, इस्से मालूम होता है कि वे सब अपने काम में खूब मशगूल हैं, और मौके पर आजांयगे, अगर जल्द आवेंगे तो हमारा बनिज शायद खटक जाय।

चौथे रोज़ हमारा एक साथी नज़र आया, हम लोग आगे बढ़कर उस्से जा मिले, और चूंकि मैं कसदन पीछे ठहर गया था उस शख्स की ज़ुबानी मालूम हुआ कि गुरुदत्त और उसके लोग हमसे एक मंज़िल आगे हैं और कुछ तो आजही और बाकी के लोग कल आ मिलेंगे।

यह कार्रवाई ठीक हुई, चार शख्स तो उसी गांव में आमिले जहां हमारा खेमा लगा था, और चूंकि अब हम लोग आठ या नौ आदमी होगये मैं ख्याल करने लगा कि इन्हें तलवार के ज़ोर से भी हम लोग मौका पाकर तमाम कर सकते हैं। मगर यह काम खतरनाक था क्योंकि वे लोग एक पर एक भारी थे और तलवार का हाथ भी निहायत अच्छा जानते थे।

दूसरे रोज़ गुरुदत्त और उसके साथी भी आ मिले मगर बमुश्किल किसी किसी तरह मैं रोकड़ियों को इस बात पर रज़ामन्द करा सका कि वे लोग

हमारे हमराह सफ़र करें, क्योंकि वे कहने लगे कि यह हमारे क़ायदे के बखिलाफ़ है और हम लोगों को इस्से ख़बरदार रहना चाहिये, फिर अगर हमारे मालिक को यह बात मालूम होजाय कि हमने एक भी मुसाफ़िर को अपने साथ रहने दिया तो हमलोगों का एतबार जाता रहे और उसी दिन नौकरी से हाथ धोना पड़े !

फिर रोकड़ियों के जमादार भीमसिंह ने कहा "मगर आप लोग अशराफ़ शख़्स हैं और जिस सर्कार के मातहत आप लोग काम करते हैं उसकी नेक-नामी के लिये आप हमारी हिफ़ाज़त चोर और डाकुओं के बखिलाफ़ करेंगे और हम लोग तो आप के साथ सेंधिया की इस रियासत में इस इतमिनान से सफ़र करते हैं गोया सवारों का एक रिसाला हमारे हमराह हो । पर आपको हमारे सिर की क़सम हम मुसाफ़िरों के कहने सुनने का लिहाज़ मत कीजियेगा, हम लोग रोकड़िये हैं हमारा कभी एतबार नहीं, और आइन्दे से आप भी याद रखिये कि जब कभी आप अकेले सफ़र करते हों किसी रोकड़िये को हमराह न होने दें, क्योंकि उनसे सिवाय नुक़सान के कोई फ़ायदा नहीं हो सकता ।"

मैंने साफ़ देखा कि अब वे लोग किसी और शख़्स को न आने देंगे और अगर मैं ज़िद करता हूं तो नतीजा यही होगा कि झगड़ा होने से वे लोग इलाहिदा हो जांयगे और हमारा बनिज जाता रहेगा इसलिये मैंने उनकी सलाह मान ली और यह मुसम्मम इरादा कर लिया कि जो १२ शख़्स मेरे पास मौजूद हैं उन्हीं के मदद से इसकाम को ख़तम करना चाहिये । जंगली तो किसी काम का न था और मैं उसका शुमार भी न करता था क्योंकि वह तो फ़क़त लाशों के कपड़े उतार सकता था मगर बाक़ी के तमाम लोग मेरे गरोह के चुनिन्दे शख़्स और मशहूर भटोट थे और तलवार का इस्तिमाल बहुत अच्छी तरह कर सकते थे ।

इसलिये हम लोगों ने दिन के वक़्त एक जवारी के खेत में छिप कर सलाह की । पीरखां ने यह राय दी कि एक शख़्स मोतीराम के पास यह ख़बर लेकर भेजा जाय कि वह रात के वक़्त अपने लोगों को साथ लेकर बगैर

मुकाम किये आगे बढ़ जावें और इतना धीरे २ सफ़र करें कि हमलोग उनसे आ मिलें और जिस वक़्त दोनों गरोह मुक़ाबिल पहुंचें झिरनी दी जाय।"

यह सलाह नेक और तदबीर आसान थी और चूंकि इसमें कामयाबी की पूरी उम्मेद नज़र आती थी मैंने इसी राय को पसन्द किया। ताहम् इसमें कोई इज़्ज़त की बात न थी क्योंकि उन चन्द लोगों पर हमारा शुमार ज़ियादा था और यह बात मुझे नापसन्द थी। आख़िरश मैंने कुछ देर बग़ौर ख़्याल करके कहा "नहीं नहीं पीरखां। हम सब नौजवान हैं और दुनियां में अपना नाम चाहते हैं। अगर हमलोगों ने इन्हें उसी पुराने तौर से मारकर दौलत बेशुमार हासिल किया तो इसमें कुछ शक नहीं कि हमारी तारीफ़ ज़रूर होगी, मगर यार मेरे, इज़्ज़त और नाम की तरफ़ तो ख़्याल करो। अगर हम लोग इनसे मुक़ाबिला करके फ़तहयाबी हासिल करें तो क्या हर एक ठग इसका ज़िक्र सुनकर "शाबस!" और "वाह! वाह" न करेगा? तो क्या इसके लिये हमलोगों को एक मर्तबः कोशिश न करना चाहिये? मैं जो तुमसे कहता हूं कि दुनिया में नामवरी दौलत से कहीं बढ़कर है। और अगर हमारा वक़्त ही आ गया होगा तो मोतीराम और उसके साथियों के बुला लेने से हम लोग कुछ बच नहीं सकते। फिर उसके साथ कुछ होशियार शख़्स भी तो नहीं है, अगर तमाम गरोह भी हाज़िर हो तौभी काम करने वाले तो हमहीं लोग न रहेंगे? कहो तुम्हारी क्या सलाह है? कल सुबह इन लोगों पर हमला करने की तुम्हारी हिम्मत पड़ती है?।

साहब, उन्हें कुछ भी तामुल न हुआ, बल्कि उन सबों ने इकरार किया कि हम लोग आपके साथ जान तक देने को तयार हैं।

मैंने कहा "अच्छा तो हरएक की म्यान से खुली रहे और हर एक शख़्स अपने शिकार के बांये तरफ़ तलवार की काट की दूरी के पार न रहे। हम और पीरखां दोनों सवार रहेंगे हर्गिज़ चूक नहीं सकते। मुझे एतकाद है कि किसी क़िस्म का ख़तरा न होगा और हम लोग ज़रूर कामयाब होंगे।

इस तरह सलाह कर हम लोग फिर उन्हीं रोकाड़ियों में आ मिले। इनमें से दो रोकाड़िये और मेरे चन्द शख़्स गाने बजाने में निहायत होशियार थे

पस शाम को सितार का शगल किया गया और कुछ गाना भी हुआ, करीब ११ बजे रात को हम लोग सो रहे और सुबह को अपना काम करने के लिये मुस्तेद थे।

दूसरे रोज़ सुबह को दिन निकल आया और आफ़ताब रौशन हुआ, हम लोगों ने डेरा कूच करदिया क्योंकि रोकड़िये लोग बगैर दिन चढ़े रवाना न होते थे सबब यह था कि अंधेरे में चोर डांकू अकसर मुसाफ़िरों पर हमला किया करते हैं।

मुझे यह देखकर निहायत पशोपेश हुआ कि उसी दिन दो रोकड़िये यह कह कर अपने शुतर पर सवार हो गये कि चलते २ हमारे पैर रह गये और कुछ पक भी गये हैं, हमलोग पैदल सफ़र नहीं कर सकते। कुछ देर तो मैं इसी ख्याल में था कि अब क्या करना चाहिये, मुझे शक हुआ कि शायद उन लोगों ने हमें पहिचान लिया, और मैं यह खूब जानता था कि ज़ियादा खजाना शुतरही पर लदा है। मगर मैंने यह मुसम्मम इरादा कर लिया था कि अगर ज़रा भी इशारा इनकी तरफ़ से भागने का नज़र आवे तो फ़ौरन् ऊंट को घायल करना चाहिये ताकि वह दौड़ न सके क्योंकि इसके एक दिन पेश्तर ही मैं देख चुका था कि उन्होंने शुतर की तेज़ी सुबूत करने के लिये उसे दौड़ाकर घोड़े के आगे निकाल दिया था।

दोपहर तक हमलोग बराबर चले गये, रास्ते में एक चश्मा निहायत साफ़ पानी का मिला और चूंकि हम लोग बसबब गर्मी के बहुत थक गये थे उसे देखते ही खुशी बखुशी सब के सब उतर पड़े। मैंने ख्याल किया कि हमला करने का यह मौका अच्छा होगा मगर इसमें मेरी नाउम्मेदी हुई, वे सब पासही पास बैठे और मुझे शक हो गया कि उन लोगों ने हमारा इरादा बेशक समझ लिया है लेकिन अब मैं देर न कर सकता था और यही इरादा कर लिया कि चाहे जो हो इस काम को जल्द ख़तम करना चाहिये क्योंकि रोकड़िये इस तेज़ी के साथ सफ़र करते थे कि मेरे साथियों को उनके बराबर चलना मुश्किल पड़ता और वे इसमें हांफ़ उठते थे।

इस नाले से रवाना होने के कोई एकही कोस बाद कि़स्मतन् सड़क ऊंची नीची और निहायत पथरीली मिली जिस्से ऊंट की तेज़ रफ़ार कुछ धीमी हुई क्योंकि उसे पत्थरों की चोट पैर में लगती जिनके बाइस वह होशियारी से कदम उठाता था, बावजूदे कि सवार लोग उसे तेज़ चलने के लिये गोद रहे थे वह आहिस्ते २ पैर धरता था। बसबब इस धीमी चाल के मेरे तमाम लोग अपने २ मौके पर जा लगे और कुछ दूर तक योंही सफ़र करते चले गये मगर अपने अपने घात से होशियार और खबरदार थे। मैंने चाहा कि जितना मुम्किन होसके मैं शुतर के नज़दीक आगेही रहूं ताकि वह भाग न सके, मगर रास्ता बदतर होता जाता था जिस्से हमारी चाल और भी धीमी हो गई और मुझे यह देखकर निहायत खुशी हुई कि अब वह ज्यादा गोदने से भी तेज़ न चलता था। इस अर्से में हम सब पासही पास जमा हो गये और मैंने देखा कि अब वक़ आ गया। साहब, मैं आप से क्या अर्ज़ करूं क्योंकर मेरा दिल धड़कता था नकि खौफ़ से, बल्कि जोश से—मेरी हालत ठीक उस जुआरी कीसी थी जो अपनी तमाम हश्मत एक ही दांव पर लगा कर, मुट्ठी बांध, दांत पर दांत बैठा, सांस रोक कौड़ी के गिरने की तरफ़ जी जान से रुजू रहता है और जिसका बनना बिगड़ना फ़कत उसी दांव पर मुनहसर है।

पीरखां ने मेरी तरफ़ निगाह फेरी, रोकड़ियों में से एक शख्स तो टट्टू की पीठ पर सवार था और दूसरा मेरे नज़दीकही नजदीक चला चलता था; दो शख्स जो शुतर पर थे हमारी तरफ़ पीठ किये अपने राजपुताने की गीत खुशी-बखुशी गाते हुये चले जाते थे और बीच बीच में मेरे लोग भी जो उनकी बोली समझते थे उनका साथ देते थे। जंगली ठीक शुतर के पीछे २ मेरा टट्टू लिये चला आता था और बाकी तमाम उसके पीछे थे मगर कोई भी अपने घात से खाली न था। मैंने एक निगाह पीछे देखा कि सब होशियार हैं न, और उन्हें खबरदार पाकर मैंने बाआवाज़ बुलन्द झिरनी दी "जंगली, पान लाओ"।

मेरे तमाम साथियों की शमशेर झमाझम म्यान से निकल पड़ीं और अपने २ बनिज के बदन से पार हो कर खून से तराबोर हो निकल आईं। मैंने अपने बगलवाले बनिज के सिर पर इस ज़ोर से तलवार मारी कि वह

पूरी धस गई और उसके गिरते ही शमशेर मेरे हाथ से छूट उसी के ज़ख्म में रह गई। मैं फ़ौरन् उसे निकालने के लिये घोड़े पर से कूदा, देखता क्या हूं कि शुतर मुंह के बल ज़मीन पर गिरा कहँर रहा है। वे दोनों सवार उसके साथ ही गिरे मगर उन्हें इतनी मुहलत मिल गई कि वे उठ खड़े हुये; एक तो जंगली पर टूटा, वह बिचारा लड़का उस ज्वान के मुक़ाबिले हिम्मत से लड़ रहा था; दूसरा तलवार उठा कर मुझ पर झपटा। साहब, मुझे ख्याल हुआ कि अब मेरा आख़ीर वक़्त आ गया मगर मुझे इतनी फ़ुरसत मिल गई कि मैंने पीठ पर से ढाल उतार बचाव के लिये आगे कर ली और उजलत के साथ तलवार खींचने लगा।

शुक्र अल्लाहताला का कि मेरे ज़ोर करतेही तलवार निकल आई और अब हम दोनों बराबर हो गये। मैं आप से पेश्तर ज़िक्र कर चुका हूं कि मैं अच्छा तलवरिया था मगर मेरे जोड़ का यह रोकड़िया ही नज़र आया। गोकि उसके तमाम साथी पासही कटे पड़े थे ताहम् वह ज़रा भी न सहमा था, उस दूसरे शख्स ने बिचारे जंगली को सख़ ज़ख्मी किया मगर अब उसे पीर खां वगैरह ने चारो तरफ़ से घेर लिया था। हम दोनों खूब लड़े और बहुत देर तक लड़ाई बराबर रही; दोनों का सांस फूलने लगा और हम दोनों की ढाल एक दूसरे की काट सम्हालने से तमाम भर गई। आख़िरकार ज्योंही मेरा पैर एक पत्थर पर रपटा कि उसने मेरे सिर पर तलवार चलाई, पर चूंकि वह थक गया था, हाथ निहायत कमज़ोर बैठा वर्नः मेरा काम तो वहीं ख़तम हो चुका था तो भी उसकी तलवार पगड़ी को काटती मेरे सिर में आकर ज़ोर से लगी।

हालां कि इस सदमे से मुझे कुछ चकाचौंधी सी आ गई मगर मैं गिरा नहीं, अगर वह चाहता तो मुझे काट डालता मगर यह उसकी गफ़लत थी कि वह चूक गया। अपनी इस शिकस्त पर खीज कर मैं उसकी तरफ़ ज़ोर से लपका जिस्से वह पीछे हट गया। हटतेही उसका पैर रपटा और वह लड़खड़ाया और तलवार को हवा में उठा अपने तईं सम्हालने लगा कि मैंने मौका पातेही आगे की तरफ़ लपक एक हाथ भरपूर इस ज़ोर से जमाया कि

वह ज़मीन पर गिर पड़ा और तलवार उसके गर्दन और कंधे के पार हो गई, गिरते ही उसका दम निकल गया। दम भर तो मैं उस दिलेर राजपूत की तरफ़ खड़ा देखता था और तब उसे छोड़ मैं उस बिचारे लड़के के पास पहुंचा जिसके बदन से खून बेतहाशा जारी था, चूंकि ज़ख्म उसके गर्दन में था खून के गले में जाने से वह बोल न सकता था।

मैंने अपने कमरबन्द से उसे रोकने की कोशिश की मगर फ़जूल हुआ, कुछ राहत उसे मालूम हुई और उसने पानी मांगा। एक मशक में थोड़ा पानी रोकड़ियों ने ऊंट के साथ बांध दिया था जैसा कि अकसर मुसाफ़िर लोग करते हैं, मैंने उसका दहाना उसके मुंह से लगा दिया, उसने कुछ पानी पीया और गुरदत्त के सहारे से उठ बैठा और कहने लगा—

"जमादार साहब—मैं तो मरा—मेराही खून मेरा दम रोकता है—मैं अब नहीं बच सकता। मेरी लाश को यहां जानवरों के खाने के लिये मत छोड़ जाइयेगा बल्कि मिहरबानी कर दफ़्न कर दीजियेगा" फिर उसने उस दूसरे कटे हुये राजपूत की तरफ़ उंगली उठा और कुछ ठहर कर कहा "उस शख्स की तलवार ने मेरा काम तमाम किया है मैंने ऊंट के पिछले पैर की नस काट दी थी और वह गिर पड़ा, मैंने समझा था कि वे दोनों गिरतेही चक्कर में आ जायंगे मगर उसने उठतेही मुझ पर हमला किया और आप देखतेही हैं कि मैं हर्गिज़ उसके मुकाबिले के लायक न था। आप सब लोग मशगूल थे नहीं तो मेरी मदद करते। पर आप क्या करें मेरी किस्मत में यहां मौत लिखी थी; मुझे कल ही इसका आसार मालूम होता था मगर अब मैं आसूदा हूं—दर्द फ़ौरन् रफ़ा हो जायगा"।

इतना कह कर वह बेहोश हो गिर पड़ा और हम सब उसके पास खड़े रोते थे क्योंकि यह लड़का सभों को प्यारा था और हम सब उसे बतौर भाई के मुहब्बत रखते थे। थोड़ी देर बाद उसे फिर होश आई, गोकि उसका गला खर्खराता था मगर बसबब खून बहने के वह बमुश्किल बोल सकता था—

उसने धीमी आवाज से कहा "मेरी मां जमादार साहब—मेरी मां और छोटी बहिन को तो आप जानतेही हैं। अब वो भूखी मर जायगी—मगर

आप इस जंगली के लिये उनकी पर्वरिश कीजियेगा" । इतना कह उसने मेरे हाथ पर सिर झुकाने की कोशिश की गोया उनके लिये मुझ से आजिज़ी करता था"।

मैंने कहा "तू कुछ खौफ़ मत खा, उनकी अच्छी तरह पर्वरिश की जायगी और जब तक अमीरअली के दम में दम है उन्हें किसी बात की हाजत न होगी।" मगर मैं हर्गिज़ अपने आसुओं को न रोक सका क्योंकि मैं उसकी बुढ्ढी मां को जानता था, उसने चलते वक़्त सैकड़ों दुआ खुदा से मांग उसे मेरे सुपुर्द कर यह इल्तिजा की थी कि "मीरसाहब इस लड़के पर हमेशा निगाह रखियेगा, खुदा आप लोगों को जल्द सही सलामत घर को वापस लावे"। अफ़सोस! मैं उसे अब क्या जवाब दूंगा।

उस गरीब लड़के को मेरे कहने से तस्कीन हुई, और इसके शुक्रीये में उसने जवाब दिया होता मगर खून की धार ने जो उसके गले में जा रही थी उसे बोलने से बाज़ रक्खा; उसने अपना सिर उठा फिर एक मर्तबः मेरी तरफ़ देखा और मेरे हाथ पर गर्दन झुका इस दुनियाये फ़ानी से कूच कर गया। मैंने अपने ठगों से जो वहां मौजूद थे कहा "देखो मैं एक बात की कसम करता हूं और अगर तुम सब उस पर राज़ी न हो तो मेरे नहीं होसकते। मैं यह कसम खाता हूं कि जो कुछ हिस्सा इस लड़के का पड़े वह दूना करके इसकी वालिदा को दिया जाय, अब तक हम लोग नहीं जानते कि क्या मिलेगा, पर जो कुछ हिस्से से हो वह दूना कर दिया जाय।"

सभों ने कहा "हमे मंजूर है, बल्कि जिस्से जो हो सकेगा वह उसके सिवाय और भी देगा। अगर जंगली ने ऊंट के पिछले पैर में सख़्त चोट न पहुंचाई होती तो वह बिलाशक भाग कर निकल गया होता, हमलोगों में से किसी को भी इस बात का ख्याल न था और कल तो हमलोग उसकी तेज़ रफ़्तार देखही चुके थे, वे दोनों राजपूत उसे बेशक उड़ा ले गये होते।"

मैंने कहा "क्यों न हो आखिर तो तुम लोग मेरे ही बिरादर न हो, पस अब तुम लोगों में से एक शख्स इस लड़के के लिये कब्र खोदे, तब तक हम लोग शुतर पर से गठड़ियां और लाशों के कपड़े उतारें। मुझे तो सिर में कुछ दर्द है मैं ज़ख्म धो कर पट्टी बांधूंगा, तुम लोग अपना काम फ़ौरन् करो"।

शुतर अब तक पड़ा कहँर रहा था, उन्होंने उसे उठाने की कोशिश की मगर वे कामयाब न हुये, तलवार की चोट ने उसके घुटने की नस काट दी थी जिस्से वह खड़ा न हो सकता था, इसलिये हमारे साथियों में से एक शख्स ने उसकी गर्दन दो टूक कर उसे तकलीफ़ से रिहाई दी। रुपये की थैलियां मेरे उस टट्टू, और मेरे और पीरखां के घोड़ों पर लाद दी गईं और हर शख्स ने अपने २ कमरबन्द में भी बांध लिया ताकि आसानी से ले चलें। राजपूतों की तलवार तो हमलोगों ने उठा ली मगर और तमाम चीजों को मय उनकी लाश के खींच कर दूर जंगल में ले जा झटपट मट्टी और पत्थर से ढँक दिया। लड़ाई के मुकाम पर जहां २ खून गिरा था वहां की मट्टी वगैरह को फ़ौरन् उठा कर एक तरफ़ फेंक दिया और थोड़ेही अर्से में सिवाय उस शुतर की लाश के जिसे हम हटा न सके कोई भी निशान लड़ाई का बाकी न रहा; पस मोतीराम और उसके गरोह की रहनुमाई के लिये मामूली निशानात छोड़ कर हमलोग असली सड़क से आगे रवाना हुये।

साहब, मंज़िल पहुंचने के पेश्तर हमलोग एक छोटे से चश्मे के किनारे बैठे हाथ मुंह धो रहे थे कि टीले के उस किनारे पर जहां से हमलोग होते आये थे हमने मोतीराम और उसके गरोह को आते देखा। उस वक़्त की खुशी का अहवाल आपसे क्या अर्ज करूं वे सब के सब दौड़कर हांफ़ते हुये एक दूसरे के गले से आ मिले।

सब से ओव्वल मोतीराम पहुंचा और आतेही मुझसे बगलगीर होगया फिर कहने लगा "मीरसाहब, इसके आगे वाली मंज़िल से हमलोग निहायत तेज़ी के साथ चले आते हैं ताकि आपके ऐन वक़्त पर मुलाकात होजाय, पर जिस वक़्त हमने शुतर को मरा हुआ देखा तब से लेकर आप से मुलाकात होने तक मेरे दिल में हजारों किस्म के ख्यालात उठे। हमने लड़ाई के चन्द निशानात वहां पाये और कुछ खून के दाग वगैरह जो आप के निगाह से बच गये थे मैं हटाता आया हूं, मगर खून देखने पर मेरा शक और भी बढ़ा, पर शुक्र है देवी का कि आखिरश आप लोगों से मुलाकात हुई, कहिये सब खैरित है न?'

मैंने कहा 'नहीं, तमाम खैरियत तो नहीं है, बिचारा जंगली उसी जंग में जख्मी होकर जाता रहा और मुझे भी कुछ चोट आई है, मगर मेरा जख्म तो हलका सा है चन्द रोज़ में आराम हो जायगा"।

उसने भी जंगली के लिये निहायत अफ़सोस किया, और तब हम लोगों ने उस खज़ाने की थैलियों को दूसरे टट्टुओं पर भी तकसीम कर दिया। गांव पहुंचने पर हम लोगों ने बाहर ही डेरा खड़ा किया और बादशां अदा करने तपोनी वग़ैरह मामूली रसूमातों के मैंने अपना वही छोटा खेमा खड़ा किया, और तमाम माल उसमें रख दिया गया। एक एक कर के गठड़ियां खोली गईं—माल का हाल आप से क्या बयान करूं, बस इतना ही कहना काफ़ी है कि वह हमारी उस जोखिम उठाने के क़ाबिलही था। रुपये और अशर्फ़ियां वगैरह सब मिला कर कुल ६००००) तो नक़द था और एक छोटे से सन्दूक में जो मोमजामे से सीया हुआ था बड़े २ मोतियों की छ लड़ियां निकलीं जिनकी क़ीमत क़रीब दस हज़ार के थी। हम लोगों के खुशी का गुमान तो आप खुद कर सकते हैं मैं क्या अर्ज़ करूं, सब के सब निहायत आसूदगी और राहत के साथ चुपचाप उस दौलत बेबहा को देख खुदा का शुक्र कर रहे थे। आखिर हम लोगों ने उसे जमा कर थैलियों में फिर भर लिया और मैंने उन पर अपनी मोहर लगा दी।

अब हम लोगों ने मकान की तरफ़ क़दम उठाया, क्योंकि अब किसी शिकार की तलाश न की और न कोई ज़रूरत थी; फ़क़त दो कम्बख़्त मुसाफ़िर जो जबरन् हमारे साथ हो गये मारे गये, बस एकही महीने के अन्दर हम लोग अपने गांव से तीन मंज़िल पर आ गये। मैंने एक शख्स को अपनी पहुंच की खबर देने के लिये पेश्तर ही रवाना कर दिया, या अल्लाह साहब! इन आफ़तों के बाद क्योंकर मेरा दिल अपनी प्यारी अज़ीमां से मिलने और अपने प्यारे बच्चों को सीने से लगाने के लिये घबड़ा रहा था। जिस वक़्त मुझे वह मशहूर अमराई नज़र आई जहां से मैं उन उम्मेदों के साथ रवाना हुआ था और जब मुझे गांव की सुफ़ेद दीवार और मसजिद की चोटी दरख़्तों में से चमकती दिखलाई दी मेरा कलेजा मकान के दर्वाज़े पर पहुंचने के लिये अन्दर से धड़कने लगा। मैंने अपने घोड़े को सरपट दौड़ाया, देखता क्या हूं कि मेरे वालिद और हुसैनुद्दीन दोनों मुझ से मिलने और इस्तकबाल देने के लिये चले आते हैं, मगर ज्योंही मैं उनके पास पहुंचा उन्होंने गर्दन झुका ली और रंज के साथ

आहिस्ते आहिस्ते चलने लगी। देखते ही मेरे सीने में गोया बर्छी पार हो गई। मैं फ़ौरन् घोड़े से कूद उनकी तरफ़ दौड़ा, मेरे वालिद मुझे देखतेही रोने लगी।

मैंने कहा "कहिये तो अल्लाह के लिये क्या हुआ? जो हो कह डालिये— क्या अज़ीमा मर गई? इस पशोपेश में तो मेरी जान जाया चाहती है"।

साहब, मेरे इस कहने पर वालिद ने जवाब दिया कि "तुम्हारा लड़का— तुम्हारा छोटा बच्चा जाता रहा।"!!

इतना कह अमीरअली रोने लगा।

बतीसवां पर्व्व।

गोकि अमीरअली जैसे खूनी के साथ किसी की भी तबीयत हमदर्दी और रंज गवारा न करती होगी ताहम् मुझे यह देख कर निहायत तर्स आया कि जिस हादसे को हुये आज बीस बरस का अर्सा गुज़रा उसके बयान करते ही और अपने प्यारे बच्चे की मौत का ख्याल आतेही उसके आंखों से आंसू टपक पड़े और दरहक़ीक़त यह रंज उसका सादिक़ था कुछ मेरे दिखाने के लिये नहीं। मैं अपने नायकीनों से इतना ही अर्ज़ कर के छोड़ देता हूं कि वे इस ठग की तबीयत पर ख्याल फर्मावें कि इस संगदिलीके कामों पर भी क्योंकर इस मुहब्बत ने उस्के दिल में जगह की थी। अब मैं आगे का ज़िक्र लिखता हूं।

अमीरअली ने कहा, साहब क्या ज़रूरत है कि अब यह कम्बख़ अपनी प्यारी अज़ीमा से मुलाकात का हाल आप से अर्ज़ करे, आप उसे खुद ख्याल फ़र्मा सकते हैं। हम दोनों की तबीयत उसी लड़के में बँधी थी और मुद्दत तक हमें इस गज़बे-इलाही का सद्मा फ़रामोश न हुआ। मगर रफ़ा २ रंज की शिद्दत कम होने लगी और हम दोनों का ख्याल उस लड़की की तरफ़ जा रहा जो रोज़बरोज होशियार होती और खूबसूरती में बढ़ती जाती थी।

मेरे वापस आने के चन्दरोज़ बाद, एक दिन वालिद ने मेरे पास आकर कहा "अमीर, उड़तीसी खबर है कि हम लोगों पर कुछ शुबहा होता है और अब इस गांव का रहना हम लोगों के लिये महफूज़ नहीं"। मैंने कहा "आप बजा फ़र्माते हैं, ख्वाह इस खबर में सचाई हो या न हो मगर यह हम

लोगों का फर्ज़ है कि अपनी हिफ़ाज़त के लिये कोई महफ़ूज़ मुक़ाम तजवीज़ कर लें"। पस मैं अपने वालिद के साथ उन रियासतों का दौरा करने निकला जो सरकार अंगरेज़ के मातहत नहीं बल्कि खुदमुख़्तियार थे ताकि किसी ऐसे राजा से मिल यह करार कर लिया जावे कि वह कुछ मुक़र्ररा ख़िराज ले कर हम लोगों को अपनी रियासत में पनाह दे जैसा कि हमारे फ़िर्क़े का अहद सेंधिया गवर्मेंण्ट के साथ उस वक़्त था जब कि वह गांव उसके मातहत में था। बादज़ां बुन्देलखण्ड के कई रियासतों की सैर करने के (क्योंकि हम लोग अपने असली मकान से दूर न जाया चाहते थे) हम लोगों की मुलाक़ात जालौन के राजा से गनेशा जमादार की मार्फ़त हुई, जिसने इस राजा की मुहाफ़ज़त में बहुत कुछ माल पैदा कर उन्हें बेशुमार दौलत नज़र की थी।

इस बन्दोबस्त के तै करने में हम लोगों को बहुत दिन लगी; चन्दरोज़ तक तो राजा साहब को इस बात का ख़तरा था कि हम लोगों को अपनी रियासत में जगह देने से शायद नतीजा ख़राब हो, सच तो यों है कि वे इस बात का बहाना करते थे ताकि हम लोग उनकी इनायत के ज़्यादा मम्नून हों, मगर हम लोगों ने भी इस क़दर रिश्वत उनके नौकर और दर्बारियों को दी कि आख़िरकार हमें कामयाबी हासिल हुई। शर्तें ये हुईं कि ६००) रुपया सालियाना ख़िराज उनकी रियासत को देना होगा और जो कोई चीज़ ज़्यादा बेशक़ीमत या नायाब दस्तयाब हो वह उन्हें नज़र दी जाय और ज़ाहिरा में काम दिखाने के लिये मेरे वालिद ने जालौन के नज़दीक तीन गांवों की इजारदारी मंज़ूर की। आख़ीर में तमाम शर्तों के तै हो जाने पर मैंने एक लड़ मोती, जो मैं दूसरी चढ़ाई में लाया था और अपनी ख़ूबसूरत तलवार और चन्द दूसरी चीज़ें जिनकी क़ीमत जुम्ला पांच हज़ार थी राजा साहब की नज़र की। जब इस तरह तर्फ़ैन की तस्कीन हो गई, मेरे वालिद और कुछ लोग वहीं रह गये और मैं अपने चन्द लोगों के हमराह अज़ीमा और अपनी लड़की को वहां ले जाने के लिये वापस आया।

साहब, मैं इक़रार करता हूं कि मुझे अपना पुराना मकान छोड़ते वक़्त निहायत रंज हुआ, वहां हम लोगों ने बरसों ऐश किये, और गांववाले भी हम से

बहुत ज़्यादा मुहब्बत रखते थे। अब हमको नये मुल्क में नये दोस्त व आशना बनाने पड़े और आप जानतेही होंगे कि इसमें किस कदर तरद्दुद दर्पेश होता है। मगर मेरे वालिद की दूरन्देशी ने हमें बचाया। अल्लाह जाने क्योंकर अंगरेज़ी अफ़सरों को उस गांव की ठीक खबर मिल गई। अपने इस नये जा पर चन्द महीने मुक़ीम होने के बाद मैंने सुना कि तमाम सुरनद पर्गने पर हमला किया गया। बहुतेरे मशहूर और जवांमर्द ठग उस लड़ाई में मारे गये और जितनेही जो जीते बचे अपनी जान लेकर भाग निकले और उन दोस्तों के पास जाकर पनाह ली जिन्होंने हमारेही म्वाफ़िक़ दुरन्देशी कर अपना इन्तिज़ाम पेश्तरही से बांध लिया था। जब तक मेरे पास सब सामान मौजूद था मैंने अपने तईं किसी नये खतरे में डालने की हर्गिज़ ख़्वाहिश न की। अलावा इसके मुझे ठगों का सबसे ऊंचा दर्जा भी हासिल हो चुका था, क्योंकि आख़िरी चढ़ाई से कामयाब आने के बाद ही मुझे सूबेदारी की ख़िलत अता हुई, पस मैं इसी में आसूदा था कि आराम से बैठा हुआ अपने वालिद की मदद उन गावों के इन्तज़ाम करने में पहुंचाता जो मेरे सुपुर्द किये गये थे और जिनसे मुझे फ़ायदा कसीर हासिल होता था। इसलिये कुछ दिनों तक हमारे ठगी का कार बन्द था, गोकि गनेशा मुझे बार बार नई चढ़ाई पर चलने के लिये उभाड़ता मगर मैं हमेशा तरह दे जाता और आराम से बाइज़्ज़त अपनी ज़िन्दगी बसर करता था।

साहब, न जाने क्या वजह थी कि गनेशा को राजा के दर्बार में देखतेही मुझे कुछ धुंधला सा ख़्याल आया कि कभी पेश्तर भी मैंने इस शख़्स को अपनी निहायत तकलीफ़ की हालत में देखा है। बावजूदे कि मैं बारहा उससे दोस्ताने तौर पर मिलने की कोशिश करता मगर न जाने मेरी तबीयत क्यों उसकी तरफ़ मायल न होती थी, मेरे वालिद से उसकी ज़्यादा दोस्ती थी मगर मैं हमेश: उसपर शक रखता, और देखता कि उसके सलाह का उनपर ज़्यादा असर होता था। बदन से गनेशा लम्बा और मज़बूत था, मगर उसकी शकल निहायत मनहूस थी और कुछ ऐसा वहशीपन झलकता था कि मेरी तबीयत उससे हमेशा गुरेज़ करती थी। खैर अब उसे जाने दीजिये,

इस वक़ उसकी कुछ ज़रूरत नहीं है आगे चलकर में उसका बहुत कुछ हाल आप से अर्ज़ करूंगा।

तीन बरस तो योंही आराम से गुज़र गये जिसमें कोई ऐसा खास वाक़या मुझे याद नहीं आता जो काबिले बयान हो। फिर मुझे कोई औलाद न हुई और मेरी लड़की रोज़ बरोज़ खूबसूरती और जमाल में तरक्की पाती जाती थी मैं निहायत आसूदा और खुश था यहां तक कि अगर राजा की बद्दियानती और खुश्कसाली का बाइस न होता तो मैं ख़ाब में भी मकान छोड़ने का ख्याल न करता। उधर राजा ने हमें यह धमकी दी कि अगर तुम ५०००/ रुपया नहीं देते तो हम तुम्हारा भेद ज़ाहिर करदेंगे, इधर बारिश न होने से उन सात गांवों की आमद में जो अब हमारे सुपुर्द थे सख़ घाटा पड़ा, क्योंकि राजा तो अपनी पूरी मालगुज़ारी हमसे वसूल करलेता था। इन वजहों के बाइस हमारे सर्मांये में ज्यादा नुकसान पड़ा, इसलिये मुझे अब चन्द ऐसे लोगों की ज़रूरत दर्पेश हुई कि जिन्हें लेकर मैं फिर एक गरोह खड़ा कर वनिज की उम्मेद में बाहर निकलूं। मगर उनका जमा करना कोई आसान बात न था सबब यह था कि मेरे तमाम लोग दूर दूर के मुल्कों में छँट गये थे और अब उनके इकट्ठा करने में बहुत वक़ और खर्च की ज़रूरत थी।

ठीक इसी वक़ यह धूम मुल्क में उठी कि चीतू और चन्द दूसरे मशहूर पिंडारी सरदार बरसात के बाद दशहरे पर जमा होंगे और दखिन की तरफ इस धूम की चढ़ाई करेंगे जैसी आज तक कभी न हुई थी, जिस्से गरोह का हर अहवाब मालामाल हो जायगा और सरकार अंगरेज़ के दिल में भी खौफ़ गालिब होगा। यह खबर ठीक मेरे हस्ब ख़ाहिश थी; मैं आप से पेश्तर अर्ज़ कर चुका हूं कि मेरी तबीयत हमेशा सिपाहियाना कार की तरफ़ रुज़ू होती थी, पस मैंने ख्याल किया कि अगर मैं चन्द चुनिन्दे सवारों के साथ किसी दुर्रे में जा शामिल होऊं तो शायद उतनाही फायदा हासिल हो जैसा कि मुझे अलग चढ़ाई करने से हो। फिर इलाहिदा सफ़र करने में कोई ऐसी उम्मेद न थी क्योंकि तमाम रास्तों में पिंडारियों का फुटकर दल घूमा करेगा जो मुसाफिर और ठग किसी को न छोड़ते, खास कर ठगोंके तो ये जानी दुश्मन होते थे।

पस इस इरादे से मैंने अपनी तयारी शुरू की । पीरखां और मोतीराम अब तक मेरे साथ थे और जिस वक्त मैंने अपना यह कसद उनसे ज़ाहिर किया वे निहायत खुशी और मुस्तैदी से उसमें शरीक होने को रजामन्द हुये। उनके पास घोड़े वगैरह के लिये रुपया काफ़ी था, पस थोड़ेही अर्से में वे दोनों घोड़े और हथियार से लेस हो सफ़र के लिये आ पहुंचे, । मैंने उनसे कह दिया था कि अगर चन्द जवांमर्द लोग और भी मिल जावें तो उन्हें लेते आना सो वे पांच शख्सों को और भी हमराह लेते आये। मगर हम लोगों के पास इतना रुपया न था कि उनके लिये घोड़े खरीदें और उन्हें पैदल ले चलने से कोई फ़ायदा न था। इसी पशोपेश में सोचते २ मुझे यह ख्याल उठा कि शायद मांगने से राजा साहब हम लोगों को घोड़े मँगनी दें या बाद कीमत चुकाने के इकरार पर दूने दाम पर फ़रोख़ करें। मैं पेश्तर ऐसी बात सुन चुका था इस लिये मैंने इसी कोशिश के करने का इरादा किया।

अब मैंने राजा साहब से अर्ज़ की वे राज़ी हो गये, और जैसा मुझे खौफ़ था कोई ऐसी मुश्किल दर्पेश न हुई, मै उन्हें निहायत अज़ीज़ हो गया। मुझे अस्तबल से पांच घोड़े मय उनके लवाज़मात के मिलने का हुक्म हुआ और हर एक की कीमत ३००) मुकर्रर की गई जिसका दूना हम लोगों को कामयाबी के साथ वापस आने पर देना पड़ेगा। राजा साहब ने इस इशारे के लिये मेरा शुकरिया अदा किया क्योंकि और बहुतेरे लोगों ने इसी शर्त पर ज़मानत दे दे कर उन से घोड़े लिये।

मैंने अपना तमाम सामान बहुत जल्द बांध लिया। हम सब निहायत उमदगी के साथ हथियार से सज तयार होगए, दरहकीकत ऐसा छोटा और दिलावर गरोह शाज़ोनादिर लोगों की निगाह से गुज़रा होगा। रवाना होने के पेश्तर हमलोगों ने सगुन देखा और उमदा पाया पस जो जो रसूमात ठगी की चढ़ाई के वक्त किये जाते थे वे सब अदा किये गये और तब हम लोगों ने डेरा कूच किया।

कुछ दिनों के बाद निमावड़ नामक मुकाम में जहां चीतू रहता था जा पहुंचे वहां हिन्दोस्तान के तमाम हिस्सों के लोग जमा थे जिनके मुख्तलिफ़ किस्म

के पोशाक हथियार और ढंग देखने में आते थे। निमावड़ के इर्द गिर्द तमाम यही लोग भरे थे और जान पड़ता था गोया तमाम शहर का शहर लूट की उम्मेद में बाग़ीबाग़ होरहा है। हमलोगों ने जातेही सर्दार का दर्बार किया और हमारी निहायत खातिरदारी की गई। मैंने पहुंचतेही उसी मामूली तौर से तलवार के मुट्ठे की नज़र की और चीतू ने हमलोगों को अपने नज़दीक बैठने का इशारा किया। मैं अदब के साथ सलाम कर बैठ गया और चूंकि मेरी पोशाक निहायत ज़र्क़ व बर्क़ थी चीतू को गुमान हुआ कि यह शख़्स कोई आले दर्जेका सरदार है और फ़क़त सातही नहीं बल्कि इससे ज्यादा लोगों का अफ़सर मालूम होता है।

साहब, चीतू निहायत शकील और दिलावर जवान था, वह इस काबिल हर्गिज़ न था कि उसकी मौत इस बुरे तौर से होती बल्कि वह जंग में सिर देने के काबिल था। कोई भी लश्करसरदार उसके म्वाफ़िक़ लूट का वाजिब हिस्सा लगाने वाला न हुआ, और न कोई सरदार चीतू पिंडारी के मानिन्द अपने मातहतों की ज़रूरियातों पर इस क़दर निगाह रखने वाला नज़र आया। यही सबब था कि उसके साथ इतने लोग रहते थे और वे सब भी अपने मालिक को चुस्त चालाक और मेहनती देख खुद भी नामवरी हासिल करने की कोशिश करते थे। वह किसी काम में न थकता, अकसर मैं देखता कि वह दूरदराज़ की मंज़िल ते करने के बाद, जब कि हम लोगों को घोड़े पर सवार रहना भी मुश्किल पड़ता था, वह बआसानी मैदान में अपने घोड़े को यों चक्कर देता गोया चन्द मील से हवा की हवा खाकर लौटा चला आता है।

जिस वक़्त पूछे जाने पर मैंने अर्ज़ किया कि बन्दा जालौन का रहने वाला है और हुज़ूर की गुलामी में हाज़िर हुआ है चीतू मेरी वज़ह और गुफ़्तगू से निहायत खुश हुआ और कहने लगा—

'ओह! आप जालौन से आते हैं तो आपने सफ़र दूरदराज की तकलीफ़ उठाई है, दोस्त! मैं आपके आने से निहायत खुश हुआ जैसाकि मैं हरएक जवांमर्द सवार से जो अपना घोड़ा लेकर मेरे साथ जंग में शरीक रहता है

खुश होता हूं आप मेरे नौकरी की शर्तें तो जानते ही होंगे; मेरे यहां कोई तनख्वाह नहीं मिलती, जिसक़दर माल आप अपनी चालाकी से लूट में पासकें आपका है, उसमें जो कुछ मेरा हिस्सा होता है वह आप मेरे आदमियों से मालुम हो सकता है, पस मेरे यहां ईमानदारी की ज्यादा ज़रूरत है और आप की शक्ल से मैं गुमान करता हूं कि आप अशराफ़ शख्स हैं।

मैंने कहा "जी मुझे शर्तें मालूम हैं, और मैं उन्हें क़बूल भी करता हूं, मगर बन्दे के साथ चन्द शख्स और भी हैं जो हुजूर की क़दमबोसी के मुश्ताक़ है अगर हुक्म हो तो उन्हें भी हाज़िर करूं।"

उन ने कहा "बेशक मगर इस वक़्त तो मैं काम में मशगूल हूं, शाम के वक़्त जहां तमाम लोग जमा हों मुलाक़ात कीजिये, उस वक़्त मैं आप के लोगों और घोड़ों को देखूंगा क्योंकि दुर्रे में जगह देना उन्हीं की लियाक़त पर मुनहसर है।"

मैंने झुक कर सलाम किया और वापस आया। इसके पेश्तर मैंने गफूर खां नामक चीतू के एक मशहूर सर्दार से मुलाक़ात हासिल की थी, यह शख्स निहायत दिलेर और जवांमर्द था, पिंडारी की शक्ल गोया उसके चेहरे से झलकती थी और उसने दोस्त महम्मद और करीमखां के दुर्रों मे बहुत नाम पैदा किया था। इसी ने मेरी मुलाक़ात चीतू से कराई और अब दर्बार से वापस आते वक़्त वह मेरे हमराह आया और आगे की कार्रवाई के बारे में सलाह देने लगा।

उसने कहा "मीरसाहब, आप शहर के बाहरवाले मैदान में आइयेगा और देखिये इतना ख्याल रखियेगा कि आप के घोड़े सब मज़बूत और खूबसूरत हों और आप के आदमियों की पोशाक और हथियारबन्दी निहायत साफ़ और नफ़ीस हो, इस हालत में मैं चीतू से कह दूंगा कि मैंने आप को अपने दुर्रे में जो लड़ाई और लूट में सब से औव्वल रहता हैं भरती करलिया। मैं आप को अपने साथ रखने में निहायत खुश होऊंगा और इस बात की कोशिश करूंगा कि अपने रिसाले के सौ या दो सौ आदमीयों की अफ़सरी आप के लिये हासिल करूंगा। हमें सरदारों की ज़रूरत है और आप की शकल से मैं कह सकता हूं कि आप इस काम के लायक़ शख्स है।

मैंने कहा "ताबेदार की भी हमेशा यही ख्वाहिश रहती है, और अगर हुजूर की योंही इनायत रहेगी तो बन्दा हत्तल मकदूर हुजूर को खुश करने की कोशिश करेगा। सच है कि खादिम ने अब तक कहीं ताबेदारी नहीं बजाई है मगर दिल की ख्वाहिश है तो बन्दा जल्द सीख सकता है"।

गफूरखां से विदा हो कर मैं फ़ौरन् अपने लोगों के पास पहुंचा ताकि उन्हें चीतू के रूबरू नज़रसानी के लिये तयार करूं। घोड़े हमारे तब तक थकावट से आराम पाकर हरे हो गये और हम लोगों ने तमाम हथियार वगैरह साफ और रौनक़दार कर लिये। वहीं बाज़ार में हज़ारों बर्छे फरोख़ हो रहे थे, हर एक शख्स ने एक एक उम्दा बर्छा जो पिण्डारियों का खास हथियार है खरीद लिया और मुऐयन वक़ पर मैं भी अपने साथियों को लेकर उस मुकाम पर जा पहुंचा जहां सैकड़ों सवार पेश्तर से मौजूद थे। मैंने सलीखांवाला ज़िरहबख़्तर जो निहायत ही उम्दा था, पहिन लिया था मेरा घोड़ा भी निहायत सुबुक रफ़्तारी के साथ उछलता कूदता खुशी के साथ चला जाता था गोया उसने इतने दिनों के बाद अब अपने दिल के म्वाफ़िक जंग का मैदान पाया। पीरखां और मोती अनकरीब मेरे ही म्वाफ़िक सजे और दुरुस्त थे और मेरे बाकी के तमाम साथी भी अगर उस गरोह से उम्दा न हों तो किसी तरह कम भी हर्गिज़ न थे"।

मैंने उनसे कहा 'देखो, सब साथ ही साथ रहो, इलहिदा मत हो वर्नः हमारा गरोह निहायत नाचीज़ जँचेगा। जिस वक़ सरदार को आते देखो, मुझ पर ख्याल रक्खो और जैसा मुझे करते देखो वैसाही तुम लोग भी करना"।

आफताब गुरूब होने के बहुत पेश्तर, चीतू चन्द निहायत दिलेर सरदारों के हमराह उस मुकाम पर आ पहुंचा। हरएक मुख़्तलिफ़ दुर्रे के अफ़सर उसके हमराह थे। हरएक के पौशाक की शानशौकत और सिपाहियाना लिबास का जुलूस और घोड़ों के जिरह और चारजामों की रौनक़ एक दूसरे से बढ़ कर थी। उसके आगे २ गफूरखां निहायत उस्तादी के साथ अपने घोड़े को उछालता कुदाता चला आता था, और उसका बख़्तर, गुरूब होते हुये आफ़ताब की रौशनी में चमक रहा था। गोकि सैकड़ों ही शहसवार एक दूसरे पर सबकत ले जाने वाले मौजूद थे लेकिन कोई भी मुझे ऐसी आसानी के साथ अपने घोड़े को फेरता हुआ खूबसूरत जवान नजर नहीं आता था।

मैंने जोश के साथ बआवाज़ बुलंद कहा 'पीरखां, देखो इसी दिलेर सर्दार के मातहत हम लोगों को काम करना होगा, क्यों यह कैसा जवांमर्द शख़स है? अब मेरे साथ आओ"। इतना कह मैंने अपने घोड़े की रास ढीली की जो आगे बढ़ने के लिये बेसब्र हो रहा था और फ़ौरन् अपने साथियों के हमराह चीतू के बगल में जा पहुंचा, घोड़े का पुट्ठा दबा बर्छा टेक उतर पड़ा और निहायत अदब के साथ सलाम कर मैंने अर्ज़ की कि हुजूर के हुक्म के मुताबिक मैं अपने साथियों को ले आया हूं"।

चीतू ने अपना घोड़ा रोक मेरी तरफ़ निगाह फेरी और निहायत खुशी के साथ फ़र्माया– "आप के हथियार वगैरह काबिल तारीफ़ हैं और आप के साथियों के घोड़े भी निहायत उमदे हैं। मैं चाहता हूं कि आप के लोगों के मानिन्द एक हज़ार जवान और भी मेरे हमराह होते। तो बेहतर होता खैर इस वक्त इतने ही सही। कहिये गफूरखां! आप मीरसाहब को अपने दुर्रे में रखियेगा? और क्या आप सौ आदमी इनके मातहत दे सकते हैं?"

खां ने कहा "जो हुक्म बन्देनेवाज़! खादिम ने तो पेश्तरही अर्ज़ किया था, मैंने तो जिस दम मीरसाहब को देखा उसी दम कह दिया था कि ये मेरे दुर्रे के ज़ीनत होंगे, और चूंकि अब ये हथियार वगैरह से लैस हैं ये तो खासे रुस्तम जान पड़ते हैं और अगर गुस्ताखी माफ़ हो तो गफूरखां ने अपने जोड़ का यही एक शख़स देखा'।

चीतू ने हुक्म दिया "तो बेहतर है, इन्हें अपने साथ रखिये और साथ मिहमानी के पेश आइये"।

खां ने मुझ से कहा "तो आइये मीरसाहब! इनमें से किसी शख़स से एक बर्छा ले लीजिये, यह मैदान भी निहायत नफ़ीस है पस मैं देखा चाहता हूं कि आप इस फन् के कैसे उस्ताद हैं"।

मैंने कहा "बहुत बेहतर, मगर मैंने आज तक बर्छा कभी चलाया नहीं। पैदल और तलवार की लड़ाई में तो बन्दा किसी से भी खौफ़ नहीं खाता, ताहम् आप के हुक्म की तामील करने के लिये मैं कोशिश करुंगा'।

मैंने एक लम्बा सा हलका बांस जिसके एक कोने पर कपड़े का गेंद बँधा हुआ था ले लिया, बजाय बर्छे के कसरत के वक्त इसी का इस्तियामाल होता था, खूबसूरती के लिये तूल की छोटी २ लाल धज्जियां इसमें लटकती थीं, पस मैं इसे उठा गफूरखां के मुकाबिल मैदान में खड़ा होगया।"

बारी बारी से हम दोनों एक दूसरे का पीछा करते थे, कभी वह हल्ला करता हुआ आगे बढ़ता और कभी मैं उसे दबा लेता था, गरोह के तमाम सवार खड़े चारों तरफ देख रहे थे और मौके २ पर वाह वाही की गोया बारिश होती थी क्योंकर मैं अजनबी शखस होकर उस उस्ताद सर्दार का मुकाबिला मैदान में करता था! बहुत देर तक कोई भी दूसरे को दबा न सका, क्योंकि दोनों के घोड़े तबियतयाफ़: थे और हर्गिज़ बर्छे की मार में न आते। इस नेज़े-बाज़ी में यही खूबी थी, और जिस वक्त किसी उमदा काट या मार को दूसरा शखस साथ कामयाबी के बचा जाता, "शाबाश" "शाबाश" की आवाज़ हल्के के चौगिर्द गूंज उठती थी। आखिरकार एक मर्तबः ज्योंही मुझे घोड़े के घुमाने में एक लहमें की देर लगी होगी कि खां ने बर्छा चलाया, रोकते रोकते वह मेरी बांह पर आहिस्ते से आ लगा और साथही उसने आवाज़ दी "वह मारा।"

हम दोनों के घोड़े रोकने से खड़े होकर हांफने लगे। मैंने कहा "बेशक, मैं इकरार करता हूं कि बर्छे पर मेरा नया हाथ है, ताहम अगर आप हुक्म देवें तो बन्दा अब की मर्तबः फिर किस्मतआज़माइश करे।"

गफूरखां ने हँसते हुये कहा 'बेहतर है, मगर याद रखियेगा कि अब की मर्तबः मैं उस रहमदिली से हाथ न लगाऊंगा क्योंकि नये शखस को जब एक दफ: तेज़ हाथ बैठ जाता है तो आइन्दे के लिये उसे गोया अपने बचाव की नसीहत हो जाती है।'

मैंने कहा "खैर आइये, देखा चाहिए कौन नसीहत देता है।"

इस मर्तबः हमलोग बड़े दायरे में खड़े हुये और आहिस्ते २ घोड़े को पोइयां चलाकर बर्छे की मार पर पहुंचे। खां ने अपने कहने के म्वाफ़िक मुझ पर कई एक सख्त वार किये, मगर मैं अपने घोड़े की चुस्ती के बाइस उन्हें ह-

मेथा बचाताही गया, मैंने साफ़ देखा कि वह भरपूर पक्का हाथ जमाने की दूरी में हर्गिज़ न आता था। उसका घोड़ा भी मेरे घोड़े की बनिस्बत ज़्यादातर भारी था, पस योंही कुछ देर और भी मैंने उसे फ़ज़ूल चक्कर देकर थकाया और यकबयक घूम कर उस पर हल्ला किया। मैं ख़्याल करता हूं कि वह मेरे इस फुर्ती और चालाकी से निहायत आजिज़ हो गया था, कि मैं अजनबी हो कर उसके बर्छे की कसरत में जिस फ़न् का वह पूरा उस्ताद था मुक़ाबिला करूं। वह पहिले के मानिन्द मेरे वारों को ठीक न रोकता था, यहां तक कि मेरी तमाम कोशिशों के फ़ज़ूल होने पर वह हँसने लगा। अब तक मैं उसे छू भी न सका था, पस मेरे बार बार के हमला करने से वह उखता गया और ज्योंही घूम कर उसने हमला करने की कोशिश की, न मालूम उसका घोड़ा फिरने में कुछ चूक गया या मेरे ज़्यादा नज़दीक होने से वह वार को न रोक सका, जो हो मैं नहीं कह सकता, मगर ज्योंहीं वह मेरे पीछे होकर घूमने लगा मैंने घोड़े को एड़ दी और उसके खड़े होतेही इस ज़ोर से मैंने बर्छा खां की छाती में मारा कि वह चौंधिया गया। आस पास वालों ने "शाबास शाबास" की आवाज़ दी और मेरी फ़तहयाबी पुख़्ता हो गई, खुद गफ़ूरखां गोकि इस शिकस्त पर कुछ शर्मिन्दा हो गया, मेरी तारीफ़ चीतू के रूबरू करने लगा --

'मीरसाहब अल्लाह जानता है आप तो खूब इस वर्ज़िश से वाक़िफ़ हैं। शायद आप मुझ से दिल्लगी करते थे।"

मैंने कहा "खां साहब, मुझे आप के दाढ़ी और क़ुरान की क़सम है कि मैं मुतलक़ बर्छे का इस्तियामाल नहीं जानता, यह तो अंधे के हाथ बटेर लग गई। अल्लाह जानता है कि मैंने सिर्फ़ दोही दिन से बर्छा हाथ में लिया है। मैंने बग़ौर इस बात पर ख़्याल किया कि आपने पहिली मर्तबः मुझ पर क्योंकर वार की थी और मेरी खुशनसीबी बसबब मेरे इस घोड़े के थी। लेकिन यह बात इत्तिफ़ाक़िया थी गोकि मैं फ़तहयाब हुआ मगर मुझे निहायत रंज है कि शायद आप को चोट लगी होगी'।

उनने कहा "नहीं मीरसाहब मुझे हर्गिज़ चोट नहीं लगी मैं इन बातों पर हर्गिज़ लिहाज़ नहीं करता, पस जैसा कि आप बर्छी पर हाथ रखते हैं ऐसीही

महारत अगर तलवार पर भी रखते हों तो मैं ख्याल करता हूं कि शायद बमुश्किल कोई शख़्स इस खेमें में आप के मुकाबिल खड़ा हो सके"।

मैंने कहा "शायद यह कहना हिमाकत समझा जाय वर्न कोई भी शख्स मेरे मुकाबिल तलवार पर आजमाइश कर ले, गोकि मैं आप लोगों में एक अजनबी शख्स हूं ताहम् अगर हुजूरेवाला की मर्ज़ी ऐसीही होगी तो बन्दा कल दो चार हाथ दिखलाने की कोशिश करेगा।"

सभों ने कहा "बहुत अच्छा" "बहुत अच्छा" और चीतू गफ़ूरखां के मुकाबिल यह नतीजा देख निहायत खुश हुआ और उसने मुझे हुक्म दिया कि कल आप इस्से ज़रा पेश्तर इसी मुकाम पर हाज़िर हों। मैं चन्द होशियार तलवरियों को बुला रक्खूंगा ताकि वे भी मौजूद रह कर तमाशा देखें।

तैंतीसवां पर्व्व।

दूसरे दिन सिपहर के वक्त हम सब लोग शहर के बाहर उसी मैदान में जमा हुये, चीतू पिण्डारियों के म्वाफ़िक अपनी शतरञ्जी बिछा कर मय अपने सरदारों के बैठ गया। उसकी शक्ल से मालूम होता था कि उसे मेरा मुकाबिला देखने का निहायत शौक था। उसने मुझे निहायत खातिरदारी से बुला कर अपने पास बैठने के लिये जगह दी और कहा पहिले इन लोगों का जो तैयार हैं दो चार हाथ देख लीजिये।

मैंने कहा "बहुत बेहतर"। चीतू के इशारा करते ही दो दिलावर राजपूत अखाड़े में उतर पड़े और कुछ देर तक गदके से लड़ते रहे, एक दूसरे की चोट फरी पर सम्हालता मगर कोई भी किसी के बदन पर चोट न लगा सका।

चीतू ने मुझ से पूछा "कहिये यह आप को पसन्द आया? आप देखतेही हैं कि इन दोनों का हाथ तलवार पर अच्छा है अगर दरहकीकत इनके पास तलवार होती तो कोई भी दूसरे के बदन से खून न निकाल सकता।

मैंने कहा "हुजूर बजा फर्माते हैं मगर बन्दा ख्याल करता है कि पेश्तर भी ये दोनों शख्स आपस में खेलते रहे होंगे इसलिये एक दूसरे की घात से वाकिफ़ हैं ये लोग ज़ाहिरा में बहुत कुछ दिखलाते हैं लेकिन दरहकीकात कसूर माफ़

हो, असली होशियारी इन में बहुत कम है। अगर हुजूर का हुक्म हो तो दोनों में से जिस्को फर्माइये मैं दो हाथ आजमाइश करूं"।

चीतूने कहा 'देखिये यह आप से कहीं बढ़ कर मालूम पड़ता है, मैं नहीं चाहता कि आप की नामवरी में बट्टा लगे, क्योंकि आप मुझे बहुत कुछ खुश कर चुके हैं"।

मैंने कहा "आप मुतलक इसका ख्याल मत कीजिये शायद बन्दा हुजूर को ज्यादा खुश करेगा"।

मैंने पैजामा उतार दिया और लँगोट पर रुमाली बाँध, हुक्म ले, अखाड़े में उतर पड़ा जहां उन दोनों में से एक राजपूत मेरे इन्तज़ार खड़ा था। मैंने पीरखां से गदका और फरी जो वह हमराह लेता आया था लेलिया और आगे की तरफ बढ़ा। सब लोग दबी जुबान से बातें करने लगे कि मुकाबला बेजोड़ है क्योंकि वे देखते थे कि उस राजपूत की लंबाई और गठीले बदन के मुकाबले मैं कुछ भी न था, मगर मैं इससे मुतलक खौफ न खाता था। मै अपनी होशियारी का खूब मोतकिद था और जानता था कि फुर्ती और चालाकी के सामने बदन की मजबूती कोई शै नहीं है"।

मैंने उस राजपूत से कहा "कहो, फैसला क्योंकर होगा क्या जो शख्स पहिला हाथ मार दे जीता समझा जायगा।"

उसने कहा "बेशक, मगर खबरदार रहिये मैं निहायत ज़ोर से मारूंगा।"

मैंने कहा "बहुत बेहतर, आओ सामने।"

वह अखाड़े के एक कोने जा खड़ा हुआ और आहिस्ते २ पैतरा बदलता हुआ आगे बढ़ा कभी झुक कर फरी को घुटने पर टेक मेरी तरफ देखता और कभी मेरे इर्द गिर्द गदके को हवा में उठाये दोनों पैरों पर पैतरा बदलता था।

मैं चुपचाप ज़ाहिरा में लापरवाही से खड़ा था मगर अपनी घात से निहायत होशियार था क्योंकि मैं जानता था कि उसके साथ २ घूमने में मुझे सिवाय नुकसान के फ़ायदा नहीं है। उसे भी मालूम होगया कि यह आगे नहीं बढ़ता इसलिये वह कुछ देर तक गौर कर मेरी तरफ़ झपटा और उसने मेरे सिर पर वाट करना चाहा। मैं खूब होशियार था क्योंकि मैं तो उसके हमला करने की

तरीके से पेश्तर ही वाकिफ़ हो गया था । मैंने गदके को फरी के नीचे कर उसकी चोट सम्हाल ली और साथ ही पांच चार हाथ उसके बदन पर गाफ़िल होते ही लगा दिया जिससे वह एक दम घबड़ा उठा । जल्से की चारो तरफ़ से 'वाह ! वाह !" की आवाज़ आने लगी इतने ही में उस दूसरे राजपूत ने आगे बढ़ कर मुझे सलाम किया और कहने लगा—

"बेशक आपने मेरे दोस्त भीमसेन से जल्द फ़तहयाबी पाई, मगर अब दो हाथ मुझ से भी आजमा देखिये ।"

मैंने कहा "मैं तयार हूं सामने आओ" । साहब यह शख्स मेरे मुकाबिल का था। वह मेरे खेल की चाल समझ गया और मुझे ऐसा ख्याल हुआ गोया मैं अपने पुराने उस्ताद बेनीसिंह के मुकाबिल खड़ा हूं मगर चूंकि अकसर मैं उससे भी जीत जाता था इसलिये मुझे इस शख्स से कुछ भी खौफ़ न हुआ । हम दोनों में वारें होने लगीं वह भी मेरे ही मानिन्द होशियार और धीमा था पस बहुत देर तक योंही लड़ने के बाद जिसमें कोई भी कामयाब न हुआ हम दोनों ठहर कर दम लेने लगे ।

चीतू ने कहा "बस बस, आप दोनों बराबर के जवांमर्द हैं, कोई भी नहीं जीता, पस बेहतर है कि इसे यहीं खतम कीजिये ।"

मैंने कहा "नहीं खुदावन्द इसे खतम करने दीजिये दो में एक शख्स को फ़तहयाबी होनी चाहिये और मेरे इस दोस्त की भी यही ख़ाहिश है कि इसका फ़ैसला हो जावे । क्यों दोस्त, तुमारी क्या राय है ?'

उस राजपूत ने मुस्कुराते हुये जवाब दिया "नवाब साहब जानते हैं कि मैंने अब तक किसी से शिकश्त नहीं खाई, मगर अब मेरे मुकाबिल का शख्स मिला है और मालूम होता है कि आप का उस्ताद अपने फ़न् का पूरा माहिर था और उसका शागिर्द भी उसी के लायक है" ।

चीतू ने कहा "अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी, मगर खुशदिली के साथ खेलो ताकि कोई झगड़ा न हो" ।

हम दोनों ने उसे सलाम किया और इस बात की तस्कीन दी कि हमलोग हर्गिज़ लड़नेवाले नहीं, चाहे कोई भी फ़तहयाब हो उसे वाजिब है कि दूसरे के फ़न् की इज्जत करे !"

चूंकि हम लोग दम ले चुके थे, इतना कह फिर मैदान में खड़े हो गये। फ़तह दोनों तरफ़ ढुलक रही थी, कभी इधर और कभी उधर को झुकती मगर किसी तरफ़ फ़ैसला न होता था। हम दोनों का पैर दो एक मर्तबः फिसल गया और तमाशाइयों ने चाहा कि हम लोग अलग हो जावें मगर उस जोश में हम लोगों ने कुछ न सुना। मैं बराबर उस राजपूत पर काट करता रहा मगर अब मैंने तरीका बदल दिया। इतनी देर तक मैं ही उस पर हमला करता रहा लेकिन अब मैंने बचाव करना शुरु किया, पर अपने घात से हर्गिज़ गाफ़िल नथा उसे यह ख़्याल हुआ कि चारो तरफ़ की मार से मुझे वह घबड़ा देगा और इसी जोश में इस क़दर बेख़बर हो गया कि उस्का एक हिस्सा मेरी तरफ़ खुलता पड़ा, पस साथ ही मैंने इस ज़ोर से हाथ मारा कि आवाज़ खटके की हुई जिसे सब ने सुना और उस्का भी दम फूल उठा। अगर मेरे हाथ में तलवार होती तो मैंने उसे बिलाशक दो टूक कर दिया होता।

"शाबास" चीतू ने आवाज़ दी "रामदीनसिंह, तुम हार तो गये मगर इस में कोई शर्म की बात नहीं है, मैं तुम्हें भी इनाम दूंगा"।

वह राजपूत हँसा, और मुझे यह देख कर निहायत खुशी हासिल हुई कि उसने इस खुशदिली के साथ अपनी शिकस्त बर्दाश्त कर ली क्योंकि मुझे हर्गिज़ ऐसी उम्मेद न थी, उसने मंजूर किया कि मैं हार गया बल्कि उसने सभों से पुकार कर कह दिया कि मैंने हत्तल मकदूर कोशिश की। पस आप सब लोग भी खबरदार रहियेगा, कि कोई शख़स मीरसाहब के मुकाबिल हिम्मत न करे क्योंकि मेरी फुर्ती और वर्ज़िश तो आप सब लोगों पर ज़ाहिर ही है"।

मैं उस राजपूत के दिलेरी और मज़ाक से निहायत खुश हो चीतू से कहने लगा "खुदावन्दन्यामत बन्दा कुछ अर्ज़ किया चाहता है अगर हुक्म पावे तो गुज़ारिश करे"।

चीतू ने कहा "कहिये मैं बेशक कबूल करूंगा"।

मैंने कहा "ताबेदार की अर्ज़ है कि यह बहादुर जवान मुझेही इनायत हो। हुज़ूर की इनायत ने इस अजनबी शख़्स पर हरावल*के एक हिस्से का इख़्तियार अता किया है और बन्दा चाहता है कि ये दोनो राजपूत भी ताबेदार के हमराह रहें। एक को पचास और दूसरे को पचीस आदमियों की अफ़सरी बख़्शी जाय"।

* हरावल = पिण्डारियों के आगे की फ़ौज।

चीतू ने कहा "अच्छा, ऐसाही हो, देखिये गफूरखां साहब इस हुक्म की तामील करदी जाय, ये लोग वक़्त ज़रूरी पर निहायत उम्दा काम करनेवाले हैं।

चन्दरोज़ बाद मैं अपने नये वहदे पर पूरी तौर से मुकर्रर हो गया। किस्मत ने मुझपर मेरी उम्मेद से ज़्यादातर रहमत की और मैंने देखा कि अब मैं अपने मालिक के मातहत खूब नामवरी हासिल करूंगा। सच है कि मैं खुद मुख़्तियार न था मगर जिस दर्जे पर मैं मुकर्रर था वह निहायत मुअज्जिज और मेरी लियाकत से ज़्यादा था। मैं ने मौका पा कर फौरन् एक छोटा सा खत अपने वालिद और अज़ीमा को लिख दिया जिसमें मैंने अपने नये वहदे और इख़्तियार का पूरा २ अहवाल दिया था क्योंकि मैं जानता था कि वे इस खुश-खबरी को सुन कर बागोबाग हो जायंगे।

इसी तरह खेमों में दिन गुज़श्त होने लगे। सुबह के वक़्त तो मैं हमेशा चीतू के साथ रहता जो दम भर भी मुझे अलग न करता, बल्कि हमेशा नये नये सिपाहियों के देखने में जो आकर हाजिर होते शरीक रखता था, शामके वक़्त हररोज़ हथियारों की नई २ कसरत होती जिसमें मैं अपनी उस नामवरी को बराबर सब पर बाला रखता था। जिस खुशी और राहत के साथ एक महीना निमावड में बीता वैसी राहत मुझे कभी भी हासिल न हुई थी क्योंकि यहां मेरे तबीयत के माफ़िक सब बातें मौजूद थीं जिनकी ख़ाहिश मुझे एक मुद्दत से लग रही थी।

आखिरकार दशहरे का त्यौहार भी आन पहुंचा और बड़े जलूस के साथ किया गया। उस रोज़ तमाम हाज़िरशुदः जवांमर्दों का शुमार किया गया, मालुम हुआ कि पांच हज़ार उमदे शहसवार मौजूद हैं, इनके सिवाय जो लोग ऐसे वैसे टट्टुओं पर सवार थे और उनके साथी वगैरह सब करीब आठ हज़ार के हुये—यह ऐसा दिलेर गरोह था कि जो मालिक के हुक्म पर जान देने और मुल्क की तबाही करने का गोया बीड़ा उठाये हुये थे।

बाद शुमार वगैरह हो जाने के यह इरादा किया गया कि नर्बदा के उस पार पहुंच कर तमाम गरोह दो हिस्सों में तकसीम किया जाय और दक्खिन में कृष्णा नदी तक चले जांय, अगर उस नदी से हमलोग पा प्यादे उतर सकें तो

बराबर दक्खिन चले ही जावें मगर फिरङ्गियों के फौज़ से जहां तक हो मुकाबिला बचाया जावे। गो कि वे लोग अब तक खामोश थे मगर हमें एतकाद था कि मौका पाकर वे ज़रूर हमारा पीछा करेंगे। सुबह की वक़ तुलू आफताब के पेश्तरही खेमा कूच हुआ, साहब मैं उस खूबसूरती का ज़िक्र आपसे क्या अर्ज़ करूं जिस वक़ दुर्रे के पीछे दुर्रा सफ़ बांध कर अपने सर्दार को सलाम करता हुआ आगे चलता था उस वक़ बुजदिल की भी तबियत तलवार उठाने को हो जाती थी। नर्बदा पर किश्तियों का इन्तिज़ाम पेश्तर ही से हो गया था, हम लोगों ने उसी दिन दर्या पार हो नर्वदा के दक्खिन किनारे पर हिंडिया नामी शहर के नज़दीक खेमा खड़ा कर दिया।

यहां से गरोह का दो हिस्सा हो गया। मेरा दुर्रा चीतू के हमराह रहा, पस तीसरे दिन हम लोग पच्छिम की तरफ़ डेरा कूच कर ताप्ती नदी के किनारे पहुंचे, जिसकी तराई से होते हुये हम सब राजा नागपुर की रियासत में पहुंचने वाले थे। इस राजा के साथ हम लोगों का यह अहद था कि वह अपने राज से हमें बगैर तसदीये के आगे निकल जानेदे और हम लोग भी उसकी रियासत तक लूट मार न करेंगे। दूसरा हिस्सा सैय्यद भीखू के मातहत पूरब की तरफ़ नर्बदा के किनारे २ रवाना हुआ, चीतू से उतर कर पिंडारियों में यही सरदार मशहूर हुआ और इसका इरादा था कि नर्बदा की तराई से होते हुये नागपूर की चौड़ी सड़क तक पहुंच कर आगे का रास्ता ले।

हम लोग हर रोज़ कड़ी मंज़िल मारते क्योंकि हर एक शख्स जाये लूट पर पहुंचने के लिये मुश्ताक हो रहा था। इधर रुपया खर्च हो जाने के सबब हम लोगों को भूखों मरने का खतरा हुआ। खबर मिली की थोड़ी सी अंगरेज़ी जंगी फौज मेजर फ्रेज़र के मातहत हम लोगों के घात में लगी है मगर गोइन्दों से मालूम हुआ कि उनका शुमार बहुत कम है और हमारे हमला किये जाने का कोई खतरा नहीं है। पता लगाने से ज़ाहिर हुआ कि वे लोग ३०० सिपाही से ज़्यादा नहीं है और हम लोगों का यह ख्याल फ़ासिद था कि वे लोग हमारा मुकाबिला करने की हिम्मत न करेंगें। उनकी उस बहादुरी का गुमान हमें मुतलक न था। इतना तो हम जानते थे कि वे लोग पंदरह कोस हमसे पीछे हैं म-

गर साथही इस गुमान में भूले थे कि किसी भी पैदल फ़ौज की हिम्मत हमारे जैसे शहसवारों पर हमला करने की न थी ।

पर उन लोगों ने हमला कियाही तो सही। हम लोग तापी नदी के किनारे एक नांव के नज़दीक जाकर मुकीम हुयेही थे और चन्द शख्स खाना पकाते और चन्द आराम से चारजामा बिछाये लेटे थे कि फ़िरङ्गियों के छापा मारने की खबर आई। इसकदर गड़बड़ मचा कि मैं आप से क्या अर्ज़ करूं। पचासों इधर उधर को भागी जाती थे; बन्दोबस्त या सिलसिले की कौन कहे जो जहां था वहीं घोड़े की पीठ लगा और अपनी जान लेकर भागा, थोड़ेही अर्से में एक शख्श भी मैदान में नज़र न आता था। मैंने फ़ज़ूल ही उन लोगों से जो मेरे साथ थे खड़े रहने की कोशिश की ताकि उन चन्द लाल कुरतीवालों से जो खड़े हमपर गोलियों की बारिश कर रहे थे मुकाबिला किया जाय। मगर उस गलबे में मेरी कौन सुनता था, गोकि मेरे ठगों और चन्द मातहतों ने इस बात की कसम करली थी कि अगर आप हमला करें तो हम लोग जान तक देने के लिये तयार हैं मगर मैंने इस में कोई फायदा न देखा इस लिये मैंने यह कोशिश न की, और चूंकि मेरे भी दो एक शख्स वहीं गिर गये थे इस लिये हम लोगों ने भी घोड़ों की बाग मोड़ी और हवा हो गये। हमारा पीछा किसी ने भी न किया, गोकि पैदल सिपाहियों के साथ चन्द सवार भी थे, अगर वे महज़ बुज़दिल न होते तो बेशक हम लोगों का पीछा कर हमें मुकाबिला करने के लिये मजबूर करते"।

साहब, मेरी यह ख्वाहिश थी कि वे मुकाबिला करें और इसी इन्तज़ार में मैंने अपने करीब सौ सिपाहियों को एक जगह जमा कर रक्खा था और अकसर उन पर बर्छे की वार दिखलाता मगर वे मुतलक जुम्बिश न करते थे। भागी निकल जाने पर हमने देखा कि अंगरेज़ों ने हमारे खेमे दखल कर लिये, हज़ारों छोटी मोटी छोलदारिया और अधपके खाने जो हम लोग छोड़ गये थे उनके लिये आरामदेह हुये क्योंकि वे दूर के थके थकाये चले आये थे। उन लोगों की अच्छी लूट दस्तयाब हुई क्योंकि बहुतेरे लोग योंही घोड़े की नंगी पीठ पर सवार हो भागे और उनके ज़रीन के चारजामें वगैरह सब वहीं छूट गये।

हम लोगों पर यह छापा सख्त और कामयाब हुआ, और अगर दुश्मनों की फौज कुछ ज्यादा होती या उनके सवार हमारा पीछा करने की हिम्मत रखते तो हम लोग को आइन्दे की तमाम उम्मेद तर्क कर अपने अपने घर का रास्ता लेते और चढ़ाई से हाथ धो बैठते। तौभी शुमार करने से मालूम हुआ कि हमारे सौ आदमी मारे गये मगर तीनही दिनके बाद हम सब फिर जमा हो गये और पेश्तरही के मानिन्द खुश वो खुर्रम थे।

आखिरकार हम लोग इलिचपुर के पूरब पहाड़ियों से होते हुये उस रास्ते से चले जिधर से लोगों की आमदरफ़्त बहुतही कम थी, यह वही रास्ता था जिधर हम लोगों ने ग़फ़्र्न को तमाम करने के बाद कदम उठाया था। वरधा नदी के पार होकर हम लोग नीज़ाम की रियासत में वारिद हुये और २५ कोस की एकही मंजिल मार अमरावती जा पहुंचे जहां का कस्द चीतू ने औव्वल ही से किया था। इस शहर के रौनक और दौलत का ज़िक्र तो मैं आपसे पेश्तर ही कर चुका हूं; इन दिनों तो उस हश्मत का नामो निशान भी कायम नहीं है।

ज्यों ज्यों हम लोग दर्या के मानिन्द मौजज़न आगे बढ़ते जाते त्यों त्यों रास्ते के तमाम गांव खाली होते जाते और तमाम वाशिन्दे अपने २ मकानात छोड़ कर निकल भागते हम लोग उन्हें एक एक करके लूटते और आग लगाते चले गये, बड़े बड़े गावों में ज्यादातर माल हाथ लगता था। खुशकिस्मती से उस दिन हरावल मेरेही सुपुर्द था, मुझे उस वक्त का जोश अब तक तरो ताज़ा है कि जब हम लोगों की जमायत पहाड़ी से उतर मैदान की तरफ़ साथ कमाल इश्तियाक के बढ़ी। मुझे खूब याद है कि मैंने तलवार फेर कर, अपने साथियों से जिनका शुमार इस वक्त करीब पांच सौ के होगा और जो धीरे २ बढ़ते ही जाते थे, ललकार कर कहा, 'देखो दोस्तो यही बरार का मैदान है, यहां चाहे जिसकदर लूट से अपनी तबीयत भर लो"।

गफूरखां को उस दिन मुझसे निहायत रश्क पैदा हुआ. सबब यह था कि वह चीतू के साथ असली गरोह के हमराह था. और मेरा हरावल आगे बढ़ा हुआ था ताकि मैं पेश्तरही पहुंच अमरावती का मुहासरा कर लूं। हमलोग बढ़तेही गये; चन्द गावों ने जिन पर हमने हमला किया फौरन् इतायत मंजूर की,

और हमारे बगैर कहे वहां के बाशिन्दों ने, रुपये और सोने चांदी के जेवरातों का ढेर हमारे आगे लगा दिया। ज्यों ज्यों आगे बढ़ते गये हमारे आने की खबर तमाम गांवों में फैलती गई और हजारों आदमी मकान छोड़ २ कर बेतहाशा भागते नज़र आते थे, हर गांव के मोहाने पर चन्द लोग दस्तबस्त. बेशकीमत नज़र लिये खड़े रहते और बमिन्नत अर्ज़ करते थे कि हमारा गांव जलाने से माफ़ किया जाय। मैं तो उन्हें छोड़ देता मगर हम लोगों के कुछ दूर आगे बढ़ते ही पीछे तीनों तरफ़ धूंये के पहाड़ नज़र आने से मालूम होता था कि चीतू के गरोह वाले ज्यादातर बेरहमी से पेश आते थे। योंही फूंकते जलाते लूटते मारते करीब शाम के अमरावती जा पहुंचे, शहर के फाटक पर बहुत कम सिपाही हिफ़ाजत के लिये मौजूद थे और वे सब भी हमारे पहुंचने की खबर पातेही भाग गये, इस लिये हम लोग बग़ैर रुकावट के शहर में वारिद हुये। साहब मेरा अमरावती में दूसरी बार पहुंचना पहिले से किसकदर मुख़लिफ़ था!

मैंने चौड़ीसड़क का रास्ता लिया क्योंकि मैं जानता था कि वहीं साहूकारों की बस्ती है और बादज़ां हर मोड़ पर अपने लोगों को मुकर्रर करने के मैं घोड़े पर सवार हो चौक बाज़ार में पहुंचा जहां शहर के तमाम खास २ रजसाय व महाजन गलीचा व शतरंजी बिछा कर हमारी ताज़ीम के लिये मौजूद थे। वे सब मुझे देखतेही उठ खड़े हुये और झुक कर अदब के साथ सलाम बजा लाये, मैं पहुंचते ही घोड़े पर से उतर पड़ा।

कुछ थोड़ी सी मामूली साहब सलामत हो गई क्योंकि हम लोगों की मुलाकात दिली तो थी ही नहीं, हर एक शख्स अपनी २ लूट का मुश्ताक था।

थोड़ी देर तक तो वे सब अपनी गरीबी और तंगदस्ती का रोना रोते रहे और यही उज्र करते थे कि हम लोग हुज़ूर के ख़ातिरख़्वाह रुपया हर्गिज़ जमा न कर सकेंगे मगर मैंने उन्हें झटकार कर कहा 'सुनिये, साहबो! इन फ़ज़ूल की बातों से कुछ फ़ायदा हासिल नहीं होता; आप लोग एक लाख रुपया देते हैं, तो क्या आप समझते हैं कि नवाब चीतू साहब इतनेही में राजी होजायंगे। मैं कुरान शरीफ़ की कसम खाकर कहता हूं कि वे इसे हर्गिज़ मंजूर न करेंगे पस बेहतर है कि आप लोग अक़्लमंदी को जगह दें और मेरे कहने पर चन्दा